Digitized by eGangotri

विमला दत्ता

अजन्ता की बोलती तस्वीरें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-M

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अजन्ता की बोलती तस्वीरें

भारत सरकार की ओर से भेंट

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अजन्ता की बोलती तस्वीरें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अजन्ता की बोलती तस्वीरें

Ajanta Ki boltki tasweerain

Vimal Dutta

विमला दत्ता

नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

National P.H. Delhi

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

प्रकाशक :
नेशनल पब्लिशिंग हाउस,
२६ ए, चन्द्रलोक, जवाहर नगर, दिल्ली
बिक्री केन्द्र : नई सड़क, दिल्ली

Sri Pertap Singh Library, Srinagar.

Acc. No 25979
Cost Rs. 2.00
Date 15.3.66

205

H 70.954
Y 73 A

मूल्य :
दो रुपये

2/-

SPS
760 V 73 A
25979

मुद्रक :
युगान्तर प्रेस,
मोरी गेट, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

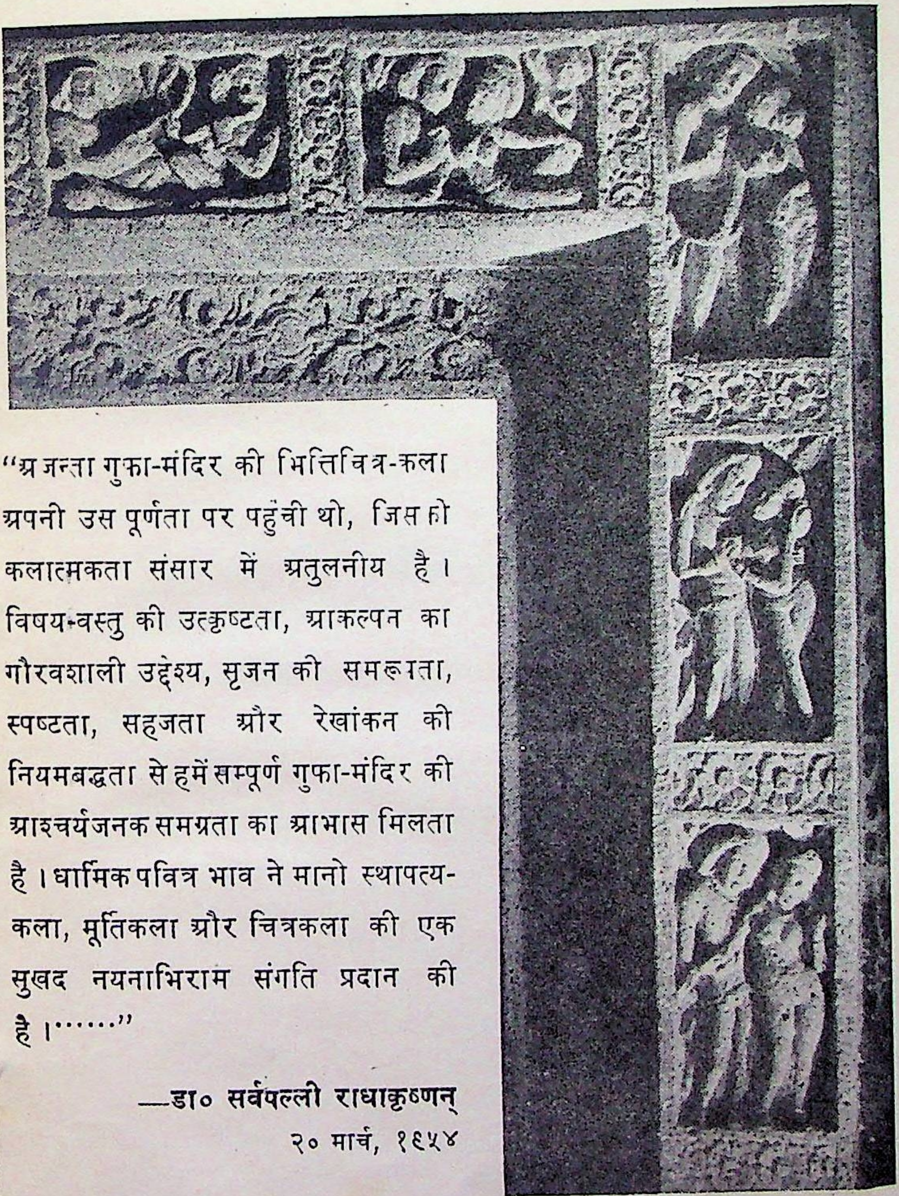

"अजन्ता गुफा-मंदिर की भित्तिचित्र-कला अपनी उस पूर्णता पर पहुंची थी, जिसकी कलात्मकता संसार में अतुलनीय है। विषय-वस्तु की उत्कृष्टता, आकल्पन का गौरवशाली उद्देश्य, सृजन की समरूपता, स्पष्टता, सहजता और रेखांकन की नियमबद्धता से हमें सम्पूर्ण गुफा-मंदिर की आश्चर्यजनक समग्रता का आभास मिलता है। धार्मिक पवित्र भाव ने मानो स्थापत्य-कला, मूर्तिकला और चित्रकला की एक सुखद नयनाभिराम संगति प्रदान की है।......"

—डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन्
२० मार्च, १९५४

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

क्रम

१. विन्ध्य की पहाड़ियों में ९
२. अजन्ता की कहानी १३
३. गुफाओं की सैर ३३

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

चित्र

१. गुफाओं का विहंगम दृश्य
२. अजंता का मार्ग (मानचित्र)
३. बघोरा नदी
४. नाल का आकार
५. हीनयान की सादगी
६. महायान का शृंगार
७. कलाओं का संगम
८. खम्भों की पच्चीकारी
९. यशोधरा से भिक्षा मांगते हुए बुद्ध
१०. कीड़ों की करामात
११. गुफा नं० १ का बरांडा
१२. एक सिर वाले चार हिरन
१३. संसार से उदासीन पद्मपाणि
१४. विरहिणी यशोधरा
१५. श्रावस्ती का चमत्कार
१६. छत पर अंकित प्रकृति और ज्यामिति
१७. चैत्य (डाईग्राम)
१८. हंस जातक
१९. दया की भीख
२०. हाथी का अनुपम सौंदर्य
२१. उपासकों का जुलूस
२२. विद्याधर
२३. विलासी का वैराग्य
२४. अप्सरा
२५. छत की सज्जा
२६. शृंगार में लीन
२७. गुफा नं० १९ का मुख्य द्वार
२८. बुद्ध की विविध मुद्राएँ
२९. यक्ष मूर्तियाँ

पुस्तक में प्रकाशित सब हाफटोन चित्र भारतीय पुरातत्व विभाग के सौजन्य से प्राप्त हुए हैं जिसके लिए हम उनके आभारी हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

विन्ध्य की पहाड़ियों में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

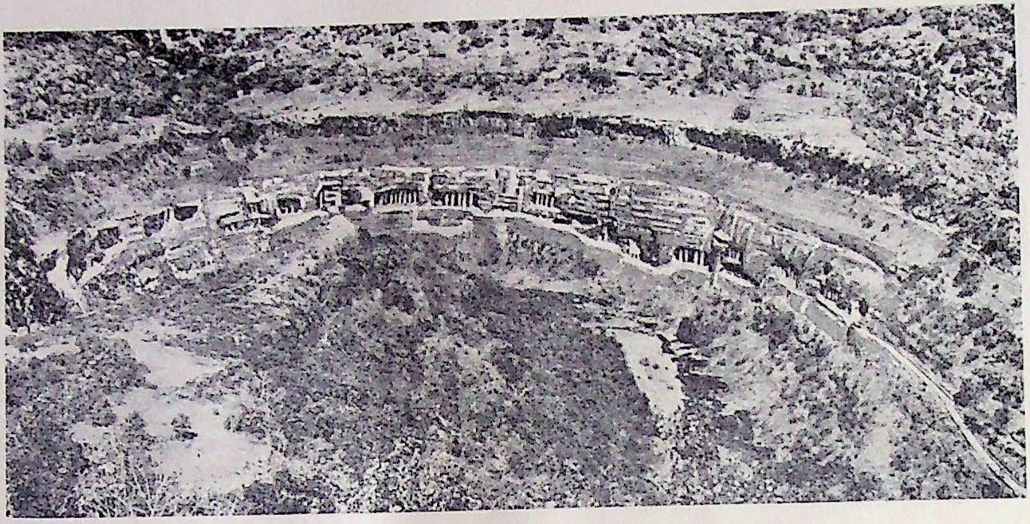

दूर से देखिए अजन्ता की इन गुफाओं को जो बघोरा नदी के किनारे हरी-भरी गोल, परन्तु अजन पहाड़ियों पर काटी गई हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अजन्ता की गुफाएँ मनुष्यों द्वारा काटी हुई वे बेजोड़ गुफाएँ हैं, जिन पर भारत गर्व करता है और जिन्हें देखकर दूर-दूर से, देश-विदेश से आए हुए लोग दाँतों तले उँगली दबाने लगते हैं। उन गुफाओं में कला के वे नमूने छिपे हैं, जिनका कोई सानी नहीं, बुद्धि का वह कौशल है कि आज के वैज्ञानिक भी हैरान रह जाते हैं, रंग-रोगन का जो ज्ञान है, उसके सामने आज का रंग-ज्ञान भी मात खाता है।

धर्म की आस्था मनुष्य की कला को भी कितना ऊँचा उठा देती है यह अजन्ता की गुफाओं को देखकर साफ हो जाता है। हर आदमी की तीव्र इच्छा होती है कि इन गुफाओं को जाकर देखे, वहाँ क्या चमत्कार छिपा है, उसको अपनी आँखों से परखे, बुद्ध की मूर्ति में क्या है जो आदमी उनके चरणों में लिपटने को विवश हो जाता है, यह स्वयं जाकर महसूस करे। पर हर आदमी के कर्म इतने ऊँचे नहीं कि वह जो चाहे सो पा ले। ऐसे लोगों को घर बैठे इन गुफाओं की कुछ जानकारी हो जाए और वहाँ जाने वालों को भी कुछ सुविधा मिले—इसीलिए यह पुस्तक लिखी गई है। गुफाओं का प्राचीन इतिहास, गुफाएँ कैसे बनीं, किसने उन्हें बनाया, किस इच्छा से बनाया, बनाने में किन चीज़ों का उपयोग किया, और फिर हर गुफा के अन्दर क्या-क्या है, इत्यादि पर इस पुस्तक में प्रकाश डाला गया है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अजन्ता कैसे पहुँचें ?

भारत के दक्षिण में औरंगाबाद नगर है। औरंगाबाद से ६६ मील की दूरी पर अजन्ता स्थित है। प्रातः ६ बजे से ही थोड़ी-थोड़ी देर बाद औरंगाबाद से बसें चलती हैं और ३ घण्टे में ही अजन्ता पहुँचा देती हैं। सैण्ट्रल रेलवे पर स्थित एक नगर है जलगाँव। यहाँ से अजन्ता लगभग ४० मील दूर है। जलगाँव से भी दो-दो घण्टे में बस चलती हैं और दो घण्टे में ही अजन्ता पहुँचा देती हैं। बस के लिए सड़कें पक्की हैं और

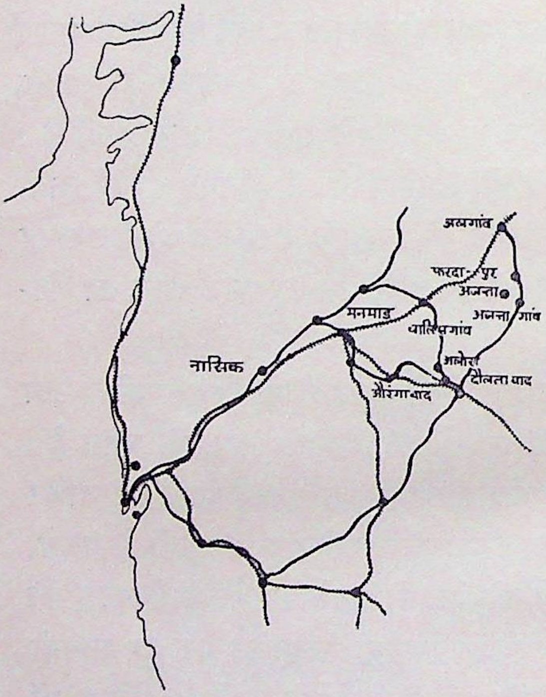

बस सर्विस भी बहुत अच्छी है। अजन्ता से तीन-चार मील दूर एक डाक बँगला भी है। जो कोई अजन्ता की गुफाओं को गहराई से देखना चाहता है वह यहाँ डाक बँगले में ठहरे, पर जिसके पास समय थोड़ा है, वह औरंगाबाद या जलगाँव से जाकर उसी दिन वापस लौट सकता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अजन्ता की कहानी

बौद्ध भिक्षुओं की ज़रूरत

लगभग २१०० साल पहले की बात है। जब भारत के हर प्रदेश में, हर राज्य में, हर नगर में बौद्ध-मत तेज़ी से फैल रहा था। लोग धड़ाधड़ बौद्ध-भिक्षु बन रहे थे। सेठ-साहूकार जल्दी-जल्दी अपनी जायदाद संघ को भेंट चढ़ा रहे थे। गणिकाएँ और वेश्याएँ अपने पेशे को छोड़कर भिक्षुणी बन रही थीं। संघ के भिक्षुओं का आदर-सम्मान यहाँ तक बढ़ता जा रहा था कि मार्ग में गेरुए वस्त्रों वाले भिक्षु दिखाई दे जाते थे तो लोग उनके पीछे लग जाते थे; कुछ उनसे बौद्ध धर्म का मर्म समझते थे। कुछ अपनी समस्याएँ सुलझवाते थे। बहुत से लोग चमत्कार देखने की इच्छा से ही व्याकुल हो उठते थे। बात यहाँ तक बढ़ी कि भिक्षुओं को अपनी साधना के लिए भी समय मिलना कठिन हो गया। वे बड़ी उलझन में पड़े। धर्म प्रचार के साथ-साथ साधना भी तो बहुत ज़रूरी थी। इस साधना के लिए ऐसे निर्जन प्रदेश की आवश्यकता प्रतीत हुई जहाँ जन-साधारण आसानी से न पहुँच सकें, जहाँ साधक शान्तिपूर्वक अपनी साधना और तपस्या कर सकें, जहाँ साधना के बीच में कोई विघ्न डालने वाला न हो।

निर्जन प्रदेश के साथ-साथ साधु-संन्यासी पहाड़ी स्थल चाहते थे, क्योंकि भारत में यह बहुत पुरानी धार्मिक प्रथा चली आई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

है कि जब कोई संन्यास ले लेता था तो पहाड़ों में चला जाता था। भारत के उत्तर में तो ऐसे कामों के लिए हिमालय की गुफाएँ मशहूर हैं। जब भी कोई योगी बहुत दिन तक योग अभ्यास करना चाहता है, तो वह हिमालय की गुफाओं में जा छिपता है। हिमालय में बहुत-सी प्राकृतिक गुफाएँ बनी हुई हैं। बहुत-सी नदियाँ हैं, जंगल भी हैं।

योगी अपने रहने के लिए ऐसी गुफा छाँटता है जो नदी के और फल-फूल वाले पेड़ों के पास हो। नदी के पास होने से उसे पानी का आराम रहता है और फल-फूल से उसे भोजन की सुविधा हो जाती है। ऐसे स्थान में जाकर रहने से उसकी साधना बिना किसी बाधा के शान्तिपूर्वक पूरी हो जाती है।

विंध्य में हिमालय का अनुकरण

जब दक्षिण में बहुत से बौद्ध भिक्षु बन गए तो वे भी हिमालय की गुफाओं जैसे पहाड़ी निर्जन स्थान खोजने लगे। इसके लिए प्राकृतिक गुफाएँ तो मिली नहीं; उन्होंने पहाड़ काटकर खुद अपने हाथों से गुफाएँ बनाने की योजनाएँ बनाईं। पहाड़ काटने के लिए रुपये-पैसे और आदमियों की ज़रूरत पड़ती है। आदमियों की उनके पास कमी न थी। एक तो वे खुद ही संख्या में बहुत थे, दूसरे उनके अनुयायी, उनके भक्त भी उनके लिए हर तरह का परिश्रम करने को तैयार थे। दूसरे रुपये-पैसे की भी कमी न थी। बड़े-बड़े सेठ, व्यापारी और राजे-महाराजे सहायता के लिए प्रस्तुत थे। बुद्ध के परिनिर्वाण या मोक्ष को ३००-४०० साल ही तो बीते थे। प्रभाव ताजा ही था।

गुफाओं को काटने के लिए उन्होंने विन्ध्या की पहाड़ियों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

को चुना। ये पहाड़ियाँ खंडेश को दक्षिण से अलग करती हैं, औरंगाबाद नगर से ६५ मील दूर उत्तर-पश्चिम में हैं और २५०

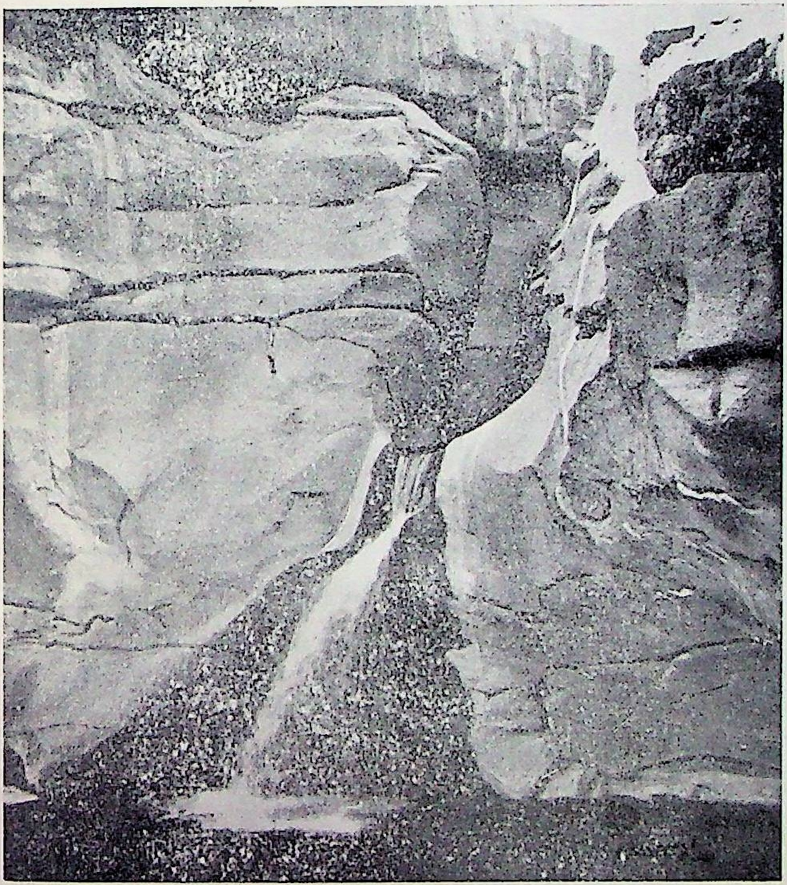

सप्त कुंड बनाती हुई बघोरा नदी

फुट ऊँची हैं। पहाड़ियाँ काली हैं और ६०० गज़ लम्बी हैं। इनके नीचे एक तंग दर्रा है। इस दर्रे में एक नदी बहती है। उस नदी का नाम है बघोरा। एक जगह ये पहाड़ियाँ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

बौद्ध भिक्षुओं को घोड़े के आधे नाल की शक्ल में खड़ी मिल गईं। घोड़े की नाल को ज़मीन पर पट रख देने से उसका आकार ठीक समझ में आ जाता है। इसी जगह बघोरा नदी पहाड़ियों का चक्कर काटती हुई उनके सामने से होकर बहती है। पहाड़ियाँ खूब हरी-भरी हैं। देखने में बड़ी मनोहर और रमणीक हैं। बौद्धों को यह स्थान बहुत अच्छा लगा। ख़ास कर घोड़े के नाल का आकार। इस शक्ल या आकार को उनके धर्म में विशेष महत्व दिया गया है। उन्होंने बुद्ध की राख गाड़ने के लिए स्तूप बनाए, तो वे भी इसी आकार के। चैत्य और उनकी छतें बनाईं तो वे भी इसी शक्ल की। इसलिए उन्हें यह स्थान बहुत अच्छा लगा।

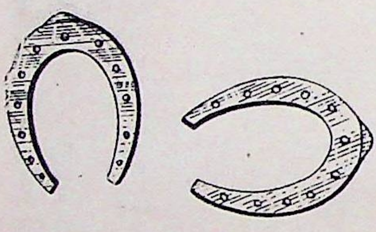

नाल का आकार

एक तो—निर्जन पहाड़ियाँ,

दूसरे—उन पहाड़ियों का आकार,

तीसरे—पहाड़ियों के सामने बहती हुई नदी,

चौथे—स्थान का सौन्दर्य।

अच्छा लगने के अलावा यह स्थान उनकी सारी ज़रूरतों को भी पूरा करता था। पहाड़ी होने से उन्हें कई लाभ थे।

एक तो, पहाड़ में रह कर धर्म-ध्यान करने की धार्मिक प्रथा कायम रहती थी।

दूसरे, गुफाएँ खूब मज़बूत रहती हैं। मैदान में बनाया गया मकान या मठ इनके बराबर मज़बूत नहीं हो सकता। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यही है कि इन गुफाओं में से सबसे पहली गुफा को बने २००० वर्ष से अधिक हो गए, फिर भी वे समय को चुनौती

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

देती हुई खड़ी हैं ।

तीसरे, भारत में पहाड़ों की कोई कमी न थी । ये जगह-जगह फैले हुए थे ।

चौथे, पहाड़ में गुफा काटने से कम ख़र्चा आता है । हिसाब फैला कर देखा गया है कि अगर किसी दूर जगह पत्थर का मकान बनवाया जाए तो पत्थर काट कर दूसरी जगह ले जाने में और फिर उन्हें जोड़ने में ज़्यादा ख़र्चा आता है। गुफा काटने में उतना ख़र्चा नहीं आता । महाराजा अशोक और उनके पौत्र दशरथ ईसा से २७३-२३२ वर्ष पहले ही इस प्रकार की गुफाएँ बिहार के गया ज़िले में खुदवा चुके थे । वे गुफाएँ दक्षिण के बौद्ध भिक्षुओं और राजाओं के सामने उदाहरण और नमूना थीं ।

फिर विन्ध्य का यह स्थान पहाड़ी स्थान होने के अलावा नगर की भीड़भाड़ और कोलाहल से दूर था। निर्जन था । अजन था । इसलिए उस स्थान और गुफाओं का नाम अजन्ता पड़ा । बघोरा नदी के पानी और फल-फूल से लदे पेड़-पौधों ने उनकी पेट की शारीरिक भूख मिटाई । वहाँ की निर्जनता ने धर्म-ध्यान में सहायता देकर आध्यात्मिक भूख मिटाई । कलकल करती हुई बघोरा ७ सीढ़ियाँ बनाती हुई गिरती थी। इन सात सीढ़ियों को सतकुण्ड कहते हैं। यह प्रपात देखने लायक है । प्रपात के सौंदर्य और चारों ओर के दृश्य ने उनकी सौन्दर्य की मानसिक भूख को शान्त किया। गुफाएँ काटने के लिए यह स्थान चुन लिया गया।

गुफा काटने का तरीका

सबसे पहले उन्होंने गुफा का नक्शा बनाया । कितनी लम्बी-चौड़ी बनेगी, कितने खम्भ होंगे, बाहर उसके बरांडा होगा कि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

नहीं इत्यादि इत्यादि। फिर उन्होंने पहाड़ को ऊपर से नीचे की ओर काटना शुरू किया। फिर अन्दर की ओर। नक्शे में जहाँ-जहाँ खम्भे थे, वहाँ-वहाँ वे उसके हिसाब से खम्भों के लिए पहाड़ का हिस्सा बिना काटे छोड़ते गए। और बाकी काटे हुए पत्थर और मिट्टी बाहर फेंकते गए। अगर कहीं बराँडा छोड़ना हुआ तो पहले बराँडे के लिए जगह खोखली की। फिर दीवार के लिए हिस्सा छोड़कर, अन्दर गुफा खोखली करनी शुरू की। इस प्रकार उन्होंने गुफा काटी। फिर दीवारों और खम्भों पर कारीगरी की और साथ-साथ एकसार भी करते गए।

भिक्षुकों के लिए जीवन में सबसे ज़्यादा ज़रूरी था धर्म-ध्यान और पूजापाठ। इसलिए सबसे पहले उन्होंने चैत्य काटा। जैसे शैवों और वैष्णवों में पूजा स्थानों को मन्दिर, मुसलमानों में मस्जिद, ईसाइयों में गिरजा, जैनियों में मन्दिर या चैत्यालय कहते हैं, उसी प्रकार बौद्धों के पूजा स्थानों को चैत्य कहते हैं। सभी धर्मों के मन्दिरों में कोई न कोई विशेषता होती है। हिंदुओं के मन्दिर के ऊपर शिखर होता है। मुसलमानों की मस्जिद के ऊपर होता है गुम्बज। जैनों के मन्दिर के ऊपर होता है मंगल कलश। उसी प्रकार बौद्धों के चैत्य की भी कई विशेषताएँ हैं।

एक तो यही कि दरवाज़ा घोड़े के नाल के आकार का होता है।

दूसरे उसमें स्तूप रहता है। बौद्धों में यह रिवाज है कि वे भगवान् बुद्ध के शरीर की राख का कुछ अंश, या कोई हड्डी, या कोई दाँत या कोई बाल एक सन्दूकची में रखते हैं। मिट्टी का या पत्थर का गोल गुम्बजनुमा या घोड़े की नाल के आकार का गोल ढाँचा बनाते हैं। उस गुम्बज में भगवान् के अवशेष की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

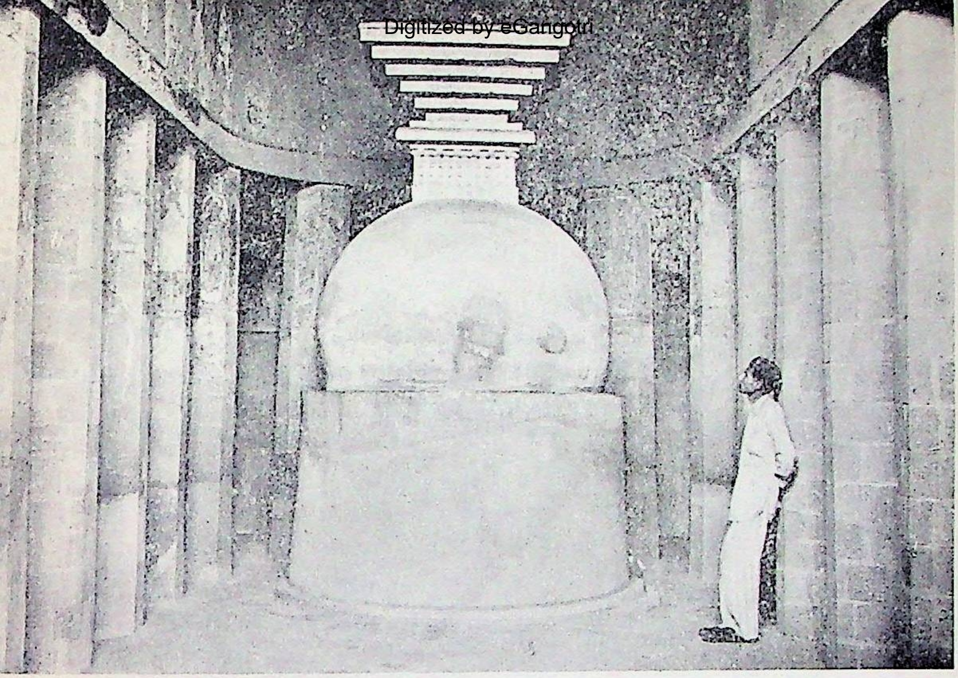

हीनयान की सादगी

सन्दूकची रख देते हैं। इसी स्थान को वे सबसे ज़्यादा पुण्य स्थल मानते हैं। इसी को पूजते हैं। इसी की भक्ति करते हैं।

हीनयान की सादगी, महायान का शृंगार

पहले स्तूप बिल्कुल सादा होता था। इस पर कोई सजावट या मूर्ति नहीं बनाते थे। यह हीनयान तरीका था।

बाद में धीरे-धीरे शैवों और वैष्णवों का प्रभाव बढ़ने लगा। उनके प्रभाव में आकर बौद्ध लोग भी अपने स्तूप की सजावट करने लगे। गुम्बज के नीचे खड़े हुए पीपे के आकार के ढाँचे बनाने लगे। इस ढाँचे पर बुद्ध की मूर्तियां और दूसरी सजावटें बनाने लगे। ढाँचे पर स्तूप बनाते थे और उसके ऊपर कहीं सन्दूकची का आकार, कहीं छतरी या छत्र का आकार आदि बना देते थे। यह महायान तरीका कहलाता है।

इस स्तूप के चारों तरफ प्रदक्षिणा या चक्कर काटने के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

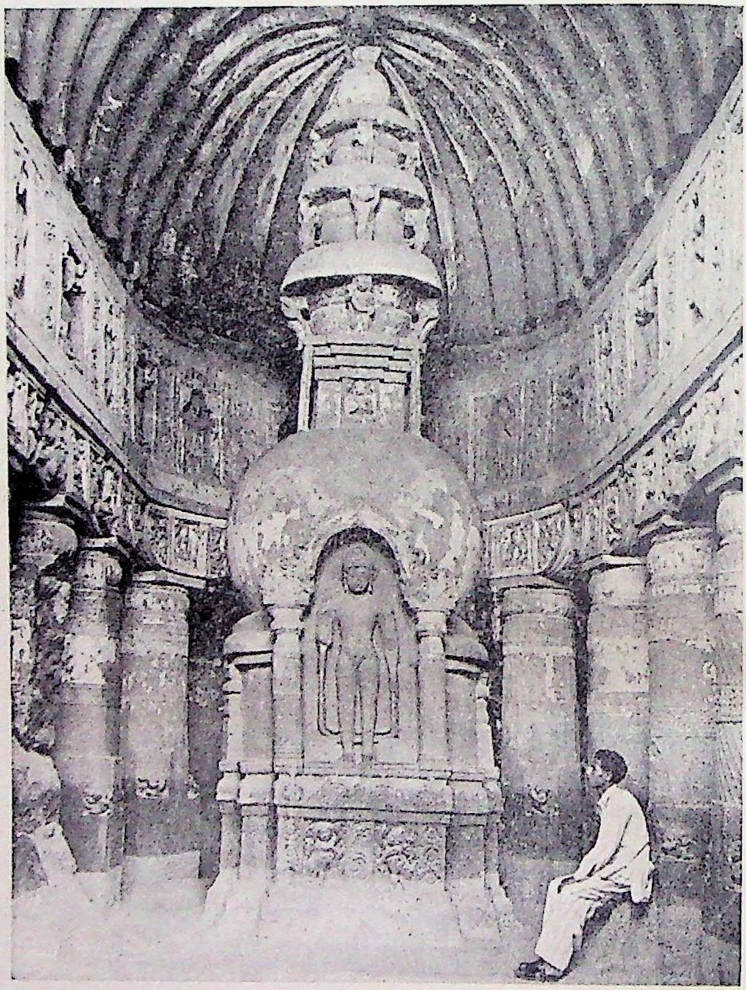

महायान का शृंगार

लिए खाली गोल स्थान होता है। जैसे नाल को पट रखने पर उसका पिछला भाग दीख पड़ता है। चैत्य की छत भी गोल होती है, जैसे खड़ी नाल का ऊपरला भाग। इस चैत्य में आवाज़ भी गूँजती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

चैत्य की कटाई के बाद बौद्ध भिक्षुओं को अपने रहने के लिए विहार की ज़रूरत पड़ी। बौद्ध भिक्षुओं के रहने के स्थान को विहार कहते हैं। महाराज अशोक ने आजकल के बिहार प्रांत में तीन साल के अन्दर ८४००० विहार स्तूप बनवाए थे और उन विहारों पर लेख भी लिखवाए थे। इसीलिए उस पूरे प्रांत का नाम ही 'बिहार' पड़ गया। भिक्षुओं ने पहाड़ों में एक दो विहार काटकर उनमें रहना शुरू कर दिया।

भिक्षुओं के वहाँ रहने की बात धीरे-धीरे सबको मालूम हो गई। बहुत से जिज्ञासु बौद्ध धर्म और दर्शन की बातें जानने के लिए वहाँ आने लगे। ये जिज्ञासु धर्म-पिपासा मिटाकर उसी दिन अपने गाँव नहीं लौट सकते थे। क्योंकि एक तो पहाड़ियाँ गाँवों से दूर थीं। दूसरे, रास्ते में जंगल पड़ता था। इसलिए उन लोगों के रहने के लिए और अधिक विहार बनाए गए।

भिक्षुओं ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए लोगों को पढ़ाना शुरू कर दिया। पर विद्यार्थियों के लिए रहने के स्थान की ज़रूरत पड़ी। तब बौद्ध-भिक्षुओं ने और अधिक विहार काटे। इनमें विद्यार्थी और शिष्य आकर ठहरते पढ़ते, सीखते और ज्ञान बढ़ाते थे। ज्यों-ज्यों इसकी ख्याति फैलती गई, दूर-दूर से लोग भिक्षुओं के दर्शन के लिए और सत्संग के लिए वहाँ आने लगे। उनकी सुविधा के लिए कुछ और चैत्य भी काटे गए और विहार भी बनाये गये।

आठसौ वर्ष में २९ गुफाएँ

समय बीतता गया और चैत्यों और विहारों की संख्या बढ़ती गई। जो भी नया राजा गद्दी पर बैठता, वह एक-दो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

गुफाएँ कटवाता। इस प्रकार बनते-बनते ईसा से २०० वर्ष पूर्व से लेकर ईसा के ६४२ साल बाद तक, साढ़े आठ सौ साल में २९ गुफाएँ बनीं। इनमें दूसरी शताब्दी से लेकर पाँचवीं शताब्दी के मध्य तक, कोई गुफा नहीं बनाई गई। इन गुफाओं में ४ चैत्य और २५ विहार हैं। इनमें कुछ अधूरी रह गईं। मालूम होता है कि जब वे गुफाएँ खोदी जा रही थीं तब किसी दूसरे धर्म के अनुयायियों ने बौद्ध धर्म के बढ़ते हुए प्रभाव को देखकर उन पर हमला कर दिया तब गुफा बनाने वाले कारीगर अपने औज़ार छोड़कर जो भागे तो फिर न लौटे। यह भी हो सकता है कि अकाल पड़ने से बौद्ध भिक्षु वहाँ से भाग गए और फिर दक्षिण में ब्राह्मणों का ज़ोर बढ़ गया, फिर न बौद्ध धर्म ही वहाँ जम पाया न अधूरी गुफाएँ ही पूरी हुईं।

जब गुफाएँ बनाई गई थीं, तो हर गुफा से नदी तक आने-जाने के लिए सीढ़ियाँ काटी गई थीं, परन्तु अब तो एक आध गुफा की सीढ़ियाँ ही दिखाई देती हैं, बाकी नष्ट हो चुकी हैं।

वास्तु, मूर्ति और चित्रकला की त्रिवेणी

गुफाएँ बनाने का मुख्य उद्देश्य तो था वहाँ रहना, धर्म साधना करना और धर्म प्रचार करना, पर गुफाएँ बनाने वालों ने अपना कला-कौशल दिखाकर गुफाओं को इन तीन कलाओं का संगम बना दिया :

१. वास्तुकला (गृह-निर्माण कला)
२. मूर्तिकला
३. चित्रकला

गुफाओं को कई तरह के आकारों में काटकर उन्होंने अपनी

25979

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

वास्तु विद्या की खूबी दिखाई। गुफाओं में सुन्दर मूर्तियाँ बनाकर तथा खम्भों और दीवारों पर तरह-तरह की बारीक नक्काशी करके उन्होंने अपनी मूर्तिकला का प्रदर्शन किया। छतों और दीवारों पर तरह-तरह के बहुरंगी चित्र अंकित करके उन्होंने अपनी चित्रकला का नमूना दिखाया।

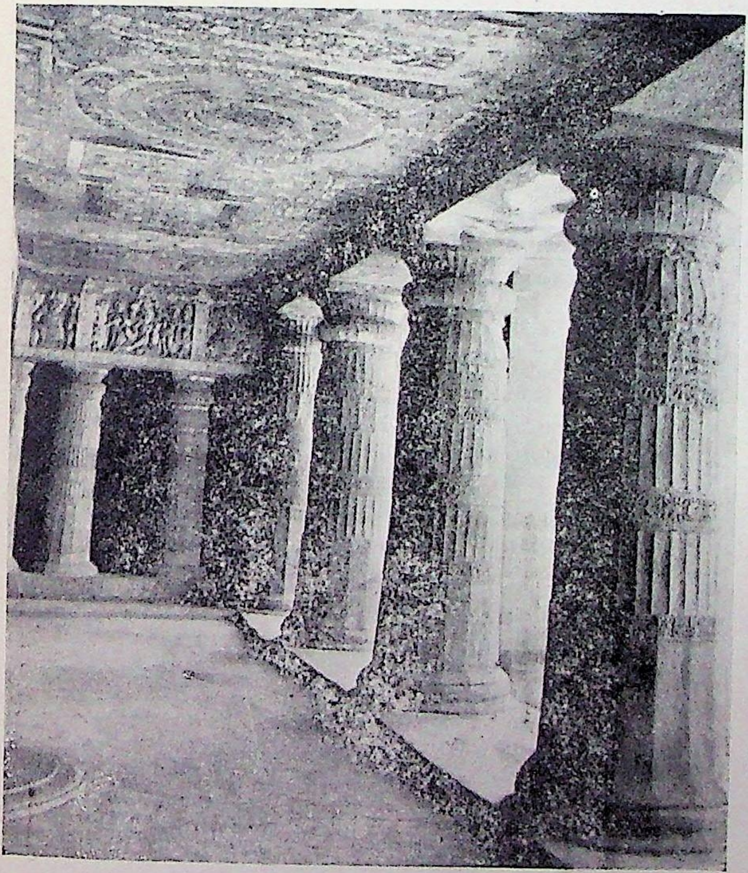

कलाओं का संगम

मूर्तिकला उनकी अनुपम थी। मूर्तियाँ ऐसी काटीं कि देखने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

में वे एकदम सजीव लगती हैं और जान पड़ता है कि बोलने वाली हैं। इन मूर्तियों में बुद्ध, उनके शिष्य, बोधिसत्व, मकर, हाथी, घोड़ा और फूल-पत्ते अधिक दिखाए गए हैं। दरवाज़ों पर द्वार-पाल, चँवर ढुलाते हुए सेवक भी काफ़ी काटे हुए हैं। खम्भों पर बहुत बारीक पच्चीकारी की गई है।

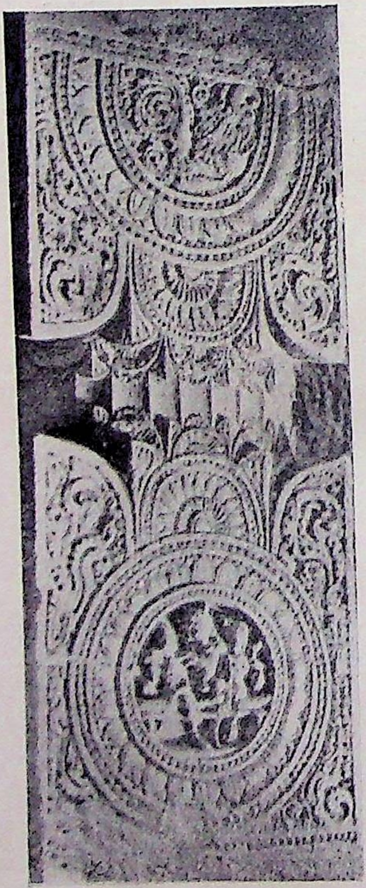

खम्भों की पच्चीकारी

ये सब नक्काशी गुफाएँ काटते समय पहाड़ के ही पत्थर में से काटी हुई हैं, अलग पत्थर को काटकर जड़ी नहीं गईं। इन्हें काटने के लिए छैनी और हथौड़ी का प्रयोग किया गया था।

जैसी ऊँची वहाँ की मूर्ति-कला है वैसी ही ऊँची श्रेणी की चित्रकला भी है। वहाँ के चित्र-कारों ने गुफाओं की छतों और दीवारों के एक-एक इंच स्थान पर चित्रकारी की थी। इस चित्र-कारी के लिए ये गुफाएँ संसार में मशहूर हो गईं हैं। दूर-दूर से लोग इसे देखने के लिए आते हैं।

गुफाओं के चित्रों में अधिकतर बुद्ध के अन्तिम जन्म की कथाएँ, माता के स्वप्न, जन्म, वैराग्य, भिक्षुवृत्ति, चमत्कार, परिनिर्वाण की कथाएँ और जातक कथाएँ चित्रित हैं। बौद्धों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

का विश्वास है कि हर प्राणी जन्म-मरण के चक्कर में फँसा रहता है। जो अपनी इच्छा और वासना त्याग देता है उसे निर्वाण प्राप्त होता है। वह फिर जन्म नहीं लेता। पर निर्वाण के पहले उसे अनेक जन्म लेने पड़ते हैं, जिनमें उसे बराबर अपनी इच्छाओं के त्याग का अभ्यास करना पड़ता है। इससे प्राणी के भाव धीरे-धीरे वैराग्य की ओर हो जाते हैं। तब कहीं जाकर मोक्ष मिलता है। बुद्ध ने भी बहुत से जन्म लिए थे जिनमें उन्होंने अपने प्राणों का ममत्व त्याग कर बुद्धि, दया और करुणा के कारण सदा दूसरों का उपकार ही किया। उनके उन पूर्व-जन्मों की कथाओं को ही जातक कथाएँ कहते हैं। पूर्व-जन्मों में बुद्ध को बोधिसत्व कहते थे।

इन जातक कथाओं में दैनिक जीवन के सभी पहलू और ऊँच-नीच, अमीर-ग़रीब, राजा-रंक सभी वर्ग चित्रित किये गए हैं। राजाओं की सभा, दरबार, सेवा में दास - दासियाँ, संगीत सभाएँ, नृत्य मण्डलियाँ, नर्तकियाँ, शिकारी, देवी-देवता, पशु-पक्षी, प्रकृति, पेड़-फूल-पौधे, वन-उपवन, पर्वत इत्यादि चित्रों के पात्र दैनिक जीवन के पात्र हैं। उन चित्रों में वे भाव दिखाये गए हैं जो मनुष्यों के हृदयों से रोज़ हर समय निकलते रहते हैं अर्थात् सुख-दुःख, प्रेम-ईर्ष्या, राग-विराग, आनन्द-उल्लास, करुणा, संयोग-वियोग, दया, माया, ममता, क्रोध, घृणा, आखेट, शृंगार, प्रेम, विलास, भक्ति इत्यादि। ये वे भाव हैं जिनसे आदमी हरदम घिरा हुआ है, अपने को भूला रहता है। इन भावों से सारे चित्र सजीव हो उठे हैं। उन्हें देखकर हमें उस समय की सभ्यता, रीति-रिवाज, तरीके, महलों के रंग, नियम-कानून और संस्कृति का पता चलता है। उनके कपड़े, आभूषण और शृङ्गार के तरीके ज्ञात होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

उनसे हमें पता चलता है कि उच्च श्रेणी की स्त्रियाँ बिलकुल नग्न रहती थीं। रानी को भी राजा के पास नग्न बैठे ही दिखाया है। कमर पतली, वक्षस्थल खूब उभरा हुआ और हृष्ट-पुष्ट, आँखें बादामी लम्बी-लम्बी। उस काल में आदर्श सौन्दर्य क्या था इसकी पूरी जानकारी होती है। दास-दासियाँ और दूसरे निम्न वर्ग के स्त्री-पुरुष कमर से घुटनों तक एक वस्त्र लपेटे दिखाये गए हैं। रानियाँ मोतियों के आभूषणों से लदी हैं। राजाओं, रानियों और राजकुमारों के मस्तकों पर खूब ऊँचे-ऊँचे सुन्दर मुकुट हैं।

यशोधरा से भिक्षा माँगते हुए बुद्ध

इन चित्रों में चित्रकार जिस आदमी या जानवर को अधिक महत्व देना चाहते थे, उसे उन्होंने चारों ओर के वातावरण की तुलना में बहुत बड़ा आकार दे दिया है। बुद्ध या बोधिसत्व के आकार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

सब जगह बहुत बड़े-बड़े बनाये हैं। अपनी पत्नी यशोधरा से भीख माँगते हुए बुद्ध को इतना बड़ा बना दिया है कि यशोधरा ऊँचे स्थान पर खड़ी होकर भी उनकी कमर तक ही पहुँच पाती है।

अजन्ता की चित्रकारी करने वालों में कुछ को तो बौद्ध राजा-महाराजाओं ने पैसा देकर रखा था और कुछ चित्रकारी संघ के बौद्ध भिक्षुओं ने की थी।

उस समय बौद्ध धर्म का प्रचार तेज़ी से हो रहा था और सैकड़ों की तादाद में लोगों को रोज़ बौद्ध धर्म की दीक्षा दी जा रही थी। सम्भव है कि कुछ कुशल और निपुण चित्रकार भी धर्म के प्रवाह में बहकर बौद्ध भिक्षु बन गए हों। आखिर वे भी तो मानव थे, उन पर भी समय का प्रभाव पड़ा ही होगा। लेकिन बौद्ध भिक्षु हो जाने से ही वे अपनी कला भूल गए हों, या उसके प्रति उदासीन हो गए हों, ऐसी बात नहीं। बल्कि वहाँ कन्दराओं में जाकर तो उनकी कला और भी जग गई। उन्हें प्राकृतिक और शान्त वातावरण मिला। बुद्ध-चरित्र, बुद्ध-जीवनी और जातक कथाओं के साथ इन प्राकृतिक दृश्यों ने उनकी चित्र-कला को प्रेरणा दी, विषय दिया। बुद्ध-चरित्र और जातक कथाओं से उन्हें मनुष्य के स्वभाव का परिचय मिला। बस उन्होंने बुद्ध के आदर्श चरित्र, मानव स्वभाव, और प्राकृतिक दृश्यों से अपने चित्रों में जान डाल दी।

काम कोई एक दिन का तो था नहीं। वर्षों की मेहनत थी। प्रतीत होता है कि कुछ दूसरे भिक्षुओं की भी इस कला में रुचि जागी, उन्होंने भी इस कला को सीखा। और हल्का-फुल्का काम करने में विशेषज्ञों को यदाकदा सहायता दी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

चित्रकला के प्राकृतिक साधन

चितेरों ने चित्रों का विषय जैसे प्रकृति और मानव स्वभाव से लिया, वैसे ही चित्र बनाने का सामान भी प्रकृति से ही चुना। उसमें न सीमेंट था, न वैज्ञानिक रसायनों से तैयार किए गए रंग-रोगन।

जिन दीवारों और छतों पर वे चित्र बनाना चाहते थे, वहाँ वे लोहे के अंश वाली चिकनी मिट्टी, गोबर और धान की भूसी और वनस्पतियों के रेशे मिलाकर आधी इंच मोटी खुरदरी तह लीप देते थे। चूने को इक्कीस दिन भिगोते और फिर उसे मिट्टी, गोबर और भूसे के पलस्तर पर पोतते थे। मिट्टी का लेप खुरदरा होने के कारण चूने के पलस्तर को अच्छी तरह पकड़ लेता था। चूने की तह की मोटाई इतनी ही रहती थी जितनी अंडे के छिलके की मोटाई। इससे वे सतह को खूब चिकना कर देते थे। तब वे गीले पलस्तर पर ही लाल रंग और गेरुआ से चित्रों की बाहरी रूपरेखा तैयार करते, फिर उन पर रंग फेरते थे। इन रंगों के लिए वे वहीं पर मिलने वाली चीज़ें इस्तेमाल करते थे जैसे पीली मिट्टी (रामरज), हरी पहाड़ी बारीक पीसकर, जली हुई ईंट पीसकर, दिए की कलौंस या काजल, चूना और नीलाथोथा। रंग भरने के बाद वे दुबारा चूना पोतते थे। चूना पोतने पर पहले के भरे हुए रंग धुंधले-धुंधले दिखाई देते थे। उन धुंधली रूप-रेखाओं के आधार पर ये फिर से बुरुश से रंग भरते जाते थे जब तक कि चित्र चमकने न लगता। रंगों में वे गोंद भी मिलाते थे। गोंद के कारण वे खूब चिपक जाते थे। ग्रामीण लोग आजकल भी अपने झोंपड़े और कच्चे मकान

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

बनाने के लिए इनका प्रयोग करते हैं, पर वे चूने के अभाव में हवा और पानी के थपेड़े खाकर जल्दी-जल्दी गिरने लगती हैं। गाँव वालों को आए दिन उस पर गोबर-मिट्टी का लेप लगाना पड़ता है।

प्रकाश प्राप्त करने का उपाय

गुफाएँ बहुत गहरी काटी गईं। इसलिए दिन के समय भी वहाँ गाढ़ा अंधेरा छाया रहता। उस समय बिजली नहीं थी कि बटन दबाते ही उजाला हो जाता। दिए और मशाल की रोशनी में इतनी बारीक मूर्तिकला और चित्रकला का काम असम्भव था। इसके लिए भी उन्होंने प्रकृति की दी हुई धूप का ही उपयोग किया। आवश्यकता आविष्कार की जननी होती है। और जहाँ चाह वहाँ राह। गुफा बनाने वालों ने भी उजाला करने का उपाय निकाल ही लिया। उपाय भी इतना सरल कि हैरानी होती है सुनकर। रोशनी पैदा करने के लिए उन्होंने दर्पण या शीशा और भगवान की दी हुई धूप बरती। जब गुफा के सामने धूप आती थी, तो वे दर्पण टेढ़ा करके धूप के सामने रख देते। धूप शीशे से टकराकर खोह के अन्दर अक्स पैदा करती। इस अक्स के स्थान पर और एक शीशा टेढ़ा रख देते। यह अक्स शीशे से टकराकर खोह के किसी और भाग पर धूप डाल देता। इस प्रकार कई स्थानों पर धूप छिटक जाती और रोशनी हो जाती थी। धूप को इस प्रकार वश में करके वे अपना काम चलाते। यह साधन भी प्राकृतिक था।

काल और कीड़ों का खेल

इतनी महनत से बनाए गए चित्रों का बहुत-सा भाग

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

खराब हो चुका है। बौद्ध धर्म के लोप हो जाने के बाद बहुत-से हिन्दू साधु गुफा देखकर यहाँ ठहरते और खाना पकाते थे। उनके धुएँ ने बहुत-से चित्रों का नाश कर दिया। फिर बाद में शैवों और वैष्णवों का जोर हो जाने पर लोगों ने इन गुफाओं में आना बन्द कर दिया। ये गुफाएँ जंगली जानवरों की मांद बन गईं। कीड़ों ने पलस्तर में छेद कर दिए। पक्षियों और चमगादड़ों ने घोंसले बना लिए। बाद में जब सरकार को इन गुफाओं का पता चला तो उन्हें देखने के लिए हज़ारों की तादाद में लोगों ने जाना शुरू कर दिया। इनमें से बहुत-से लोगों ने उन पर अपने नाम लिख दिए, बहुतों ने उन्हें यूं ही उखाड़-उखाड़ कर फेंक दिया, बहुत-से चोरों ने बड़े-बड़े टुकड़े उखाड़ कर विदेशियों के हाथ खूब मँहगे दामों में बेचे। इस प्रकार अब तो यहाँ जगह-जगह पलस्तर और चित्र झड़ गए हैं। पर सरकार पूरी कोशिश कर

कीड़ों की करामात

Sri Pratap Singh Library Srinagar.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

रही है कि जो कुछ बच गया है वह आगे खराब न हो।

पुनरुद्धार का प्रारम्भ

१००० साल से दबी पड़ी अजन्ता गुफाओं का पता कैसे लगा, इसकी भी एक रोचक कहानी है।

सन् १८१९ में एक अंग्रेज़ मद्रास की सेना में काम करता था। एक दिन वह विन्ध्य की पहाड़ियों पर शिकार के लिए निकला। चलते-चलते रास्ता भूल गया। एक किसान लड़के ने इनाम के लालच में कहा—"साहब हम तुम्हें शिकार बताएं ? वो देखो।" इतना कहकर उसने एक तरफ उंगली उठा दी। दूर से लाल-लाल चमकता रंग देखकर किसान के लड़के और अफ़सर ने समझा कि ये किसी जानवर की आँखें हैं। उस अफ़सर ने दूरबीन लगा कर ग़ौर से देखा तो पता चला कि वह लाल-लाल चमकती हुई चीज़ किसी जानवर की आँखें नहीं, किसी गुफा की चित्रकारी है। अफ़सर खुशी से उछल पड़ा। उसने कला के बहुत बड़े खज़ाने का पता लगा लिया था। अगले दिन वह बहुत से आदमियों को लेकर आया। रास्ते के पेड़-पौधे साफ करा कर वहाँ तक पहुँचा और सरकार को इसकी सूचना दी। तभी से जनसाधारण को कला के इस छिपे हुए भण्डार, प्राचीन संस्कृति और सभ्यता के इस नमूने को देखने का अवसर मिला।

अब तो ये गुफाएं सारे संसार में मशहूर हो गई हैं। दूर-दूर से लोग इन्हें देखने के लिए आते हैं। कला के पुजारी यहाँ, कला की दृष्टि से आते हैं। बौद्ध मत को मानने वाले इसे तीर्थ मान कर आते हैं। जापान, चीन, बरमा, तिब्बत, लंका आदि देशों के यात्री यहाँ आकर ठहरते हैं। बुद्ध भगवान के दर्शन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

करके, बघोरा में अपने पाप धोकर अपने को धन्य समझते हैं। इतिहासज्ञ यहाँ प्राचीन संस्कृति और सभ्यता के अध्ययन के लिए आते हैं। आम आदमी के लिए तो वह हर तरह से नई और देखने लायक चीज़ हो गई है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

गुफाओं की सैर

अजन्ता की गुफाओं के बारे में आपने बहुत कुछ जान लिया। अब गुफाएँ देखी जायँ।

गुफा नं० १

बस स्टैण्ड से गुफाओं तक पहुँचने के लिए बहुत सारी सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती हैं। सीढ़ियों के बाद जो भी सबसे पहली गुफा पड़ी सरकार ने उस पर नं० १ डाल दिया और फिर क्रम से सब पर नम्बर डालती चली गई। इन नम्बरों का गुफाओं के निर्माण-काल से कोई सम्बन्ध नहीं है। यों तो गुफा नं० १० सबसे पहले खोदी गई थी और फिर उसके इधर-उधर धीरे-धीरे और गुफाएँ कटती चली गईं। यह गुफा नं० १, ईसवी ४७५ और ५०० के बीच की बनी हुई है।

इस गुफा के सामने एक बराँडा है। इस बराँडे में खम्भे हैं। खम्भे के ऊपरी दोनों कोनों में उड़ते हुए गन्धर्वों के जोड़ों की आकृतियाँ खुदी हुई हैं। उसके नीचे आमलक है।

प्राचीन काल में आमलक अर्थात् आँवले को इतना महत्व देते थे कि उसका आकार खम्भों में, मन्दिरों के ऊपर, जहाँ-तहाँ बनाते रहते थे। इसका कारण यह था कि उसमें विटामिन सी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

बहुतायत से पाया जाता है। यह विटामिन सी स्वास्थ्य, दिल और दिमाग़ की ठण्डक के लिए बहुत ही उम्दा वस्तु माना गया है। इसी को यहाँ कहीं-कहीं खम्भों में बना रखा है।

कहीं-कहीं आमलक के नीचे और खम्भों के ऊपर चारों कोनों में चार बौने इस तरह बना दिए हैं जैसे वे ऊपर का सारा भार सँभाले हुए हों। सब खम्भे एक ही डिज़ाइन के नहीं हैं। उन पर अलग-अलग डिज़ाइन बने हैं। गुफा अन्दर से चौंसठ फुट लम्बी और चौंसठ फुट चौड़ी है। अन्दर २० खम्भे हैं। १४ कोठरियाँ हैं। बौद्ध भिक्षुओं ने सांसारिक गृहस्थ लोगों से अलग रहने के लिए ही ये विहार बनाए थे। इसीलिए इन विहारों में ये छोटी-छोटी कोठरियाँ भी बनाई गई थीं। तब के भिक्षुओं को पहनने के कुल चार-पाँच कपड़े ही रखने की आज्ञा थी। बहुत से बहुत एक कम्बल और रख सकते थे। उन भिक्षुओं के लिए तो पहाड़ पर सर्दी से बचने का यही उपाय था कि गुफा के भी अन्दर छोटी सी कोठरी बनाकर रहें।

खम्भों पर कारीगरी है। सबसे आखिर की पंक्ति के बीच के खम्भों पर बहुत भारी काम है। इन कामों में बुद्ध के जीवन की घटनाएँ, स्तूप की पूजा और आदमियों के तरह-तरह के दृश्य हैं। इन दृश्यों में पशु भी हैं।

इस गुफा के अन्दर सामने की दीवार के बीचों-बीच २० फुट के चौकोर चैत्य में भगवान् बुद्ध की बहुत भारी मूर्ति है। उनकी मुद्रा धर्मचक्र प्रवर्त्तन मुद्रा है, अर्थात् शरीर के अंग उपदेश की मुद्रा में हैं। उनके दोनों ओर चंवर ढुलाने वाले हैं। ऊपर कोनों में माला लिए हुए उड़ती हुई आकृतियाँ हैं। उनके नीचे दो हिरणों के बीच चक्र है। बुद्ध का कहना था कि सांसारिक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

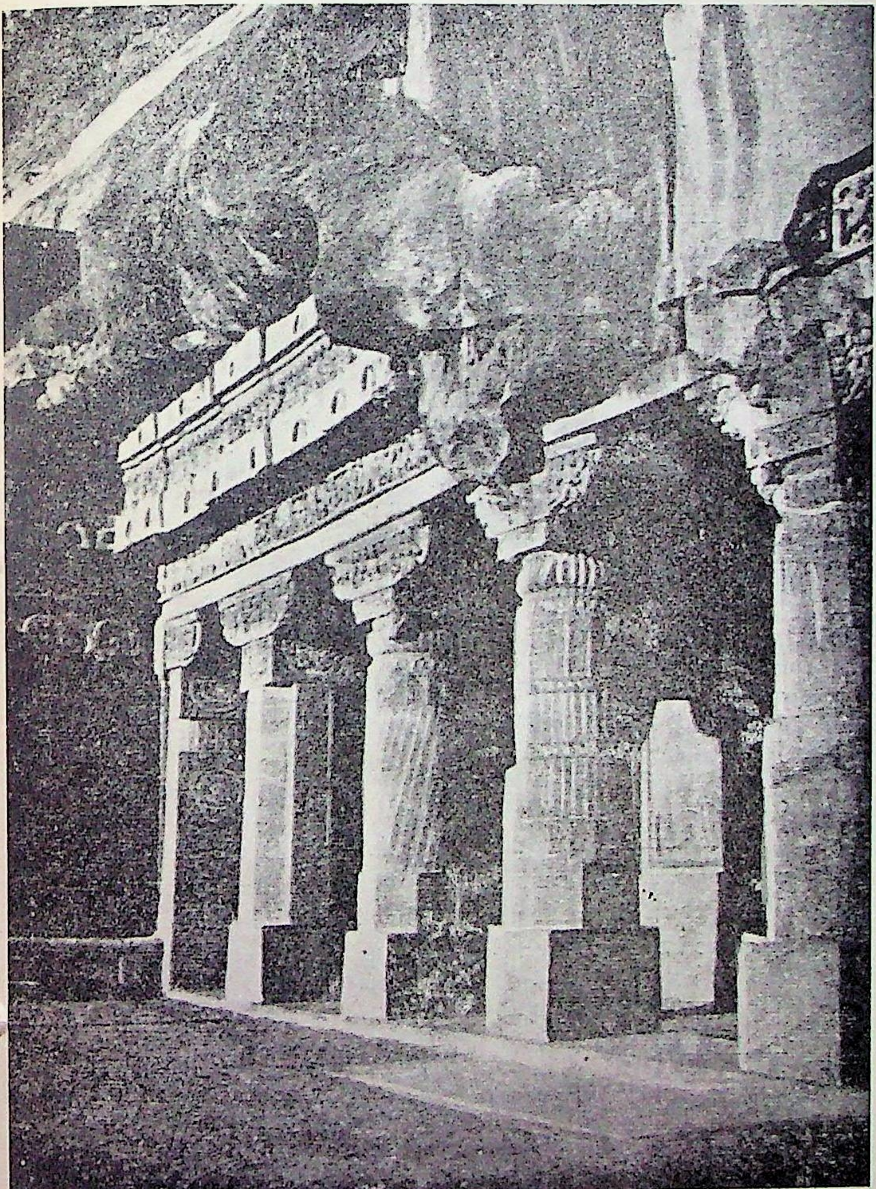

गुफा के सामने का बराँडा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

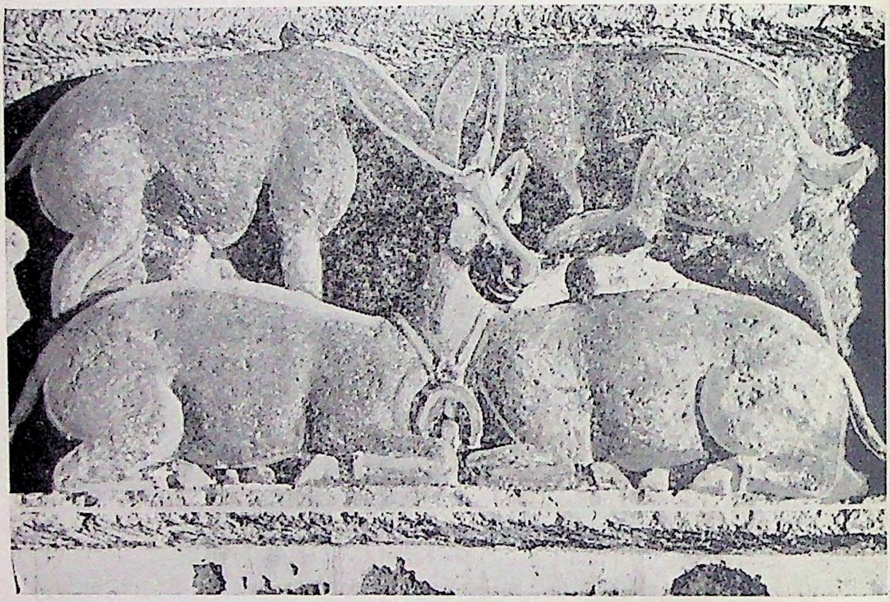

एक सिर वाले चार हिरन

इच्छाओं के कारण यह जन्म-मरण का चक्र चलता रहता है। इसलिए बौद्धों में चक्र को बहुत महत्ता दी गई है। बाएँ हिरण के पास ५ भिक्षु बैठे हैं। पाँच ब्राह्मण ही सबसे पहले बुद्ध के शिष्य बने थे। यहाँ वे ही पाँच शिष्य दिखाए गए हैं। बुद्ध के ऊपर जो छत्र बना है उस पर चित्रकारी है।

एक खम्भे पर एक सिर वाले चार हिरन इस प्रकार बैठाए हैं कि किसी भी हिरन के शरीर की ओर देखो तो वह सिर उसी का प्रतीत होता है।

इस चैत्य की चौखट पर बहुत बारीक काम है। कहीं बेल-बूटे, तो कहीं नाग, कहीं स्त्री-पुरुष के युगल, कहीं खड़ी स्त्री। इस गुफा में जगह-जगह बोधिसत्व के विशाल चित्र बने हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

चैत्य के बाहर एक ओर बुद्ध के गृहस्थ समय का चित्र है। चित्र में उन्होंने एक कमल का फूल पकड़ रखा है। इसलिए उन्हें

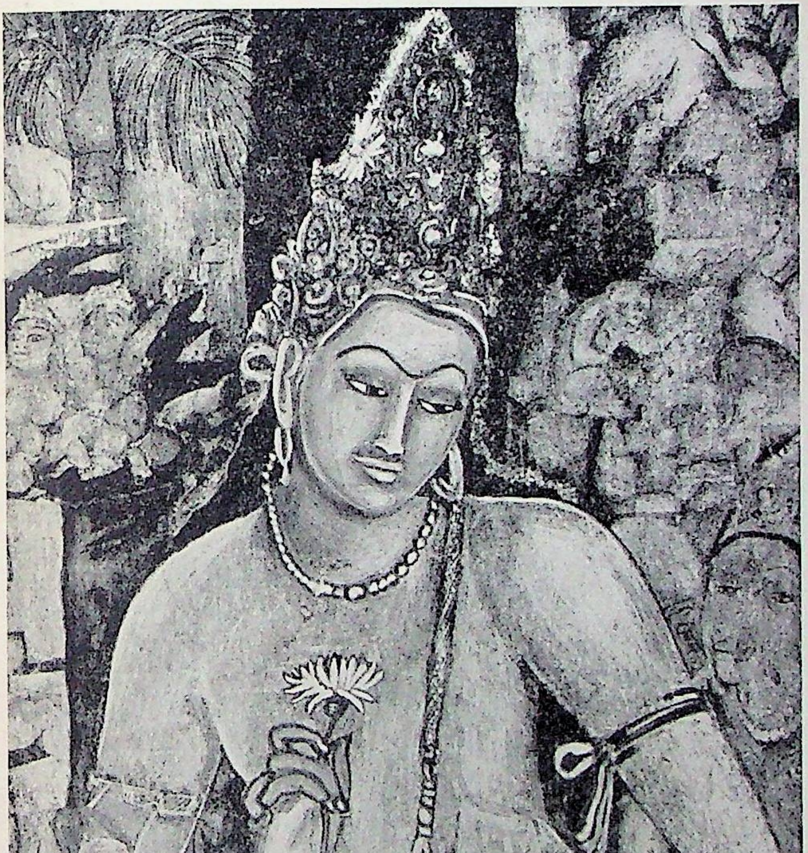

संसार से उदासीन पद्मपाणि बोधिसत्व

पद्मपाणि कहते हैं। इसमें उन्होंने ऊँचा त्रिकोण आकृति का भारी मुकुट पहन रखा है। गले में मोतियों की माला और बाहों में बाजूबंद

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पति की उदासीनता से दुःखी कमलधारी यशोधरा

पहन रखे हैं। यह बुद्ध के पिछले जन्म की कहानी है। राजा होते हुए, सुख-वैभव से घिरे हुए भी उन्हें संसार से विराग था, यह उनके शान्त, सौम्य चेहरे और झुकी हुई आँखों से साफ़ झलकता है। उनकी कमानदार दोनों भौहें बीच में मिल गई हैं। लम्बी-लम्बी नीचे को झुकी हुई आँखें, एक ओर को झुका हुआ शरीर, सब मिलकर चेहरे पर ऐसा भाव है कि किसी को किसी से पूछने की आवश्यकता नहीं। देखते ही अपने आप पता चल जाता है कि चित्रकार अपने चित्र में क्या झलकाना चाहता था।

उनके बाईं ओर उनकी स्त्री यशोधरा भी कमल पकड़े हैं। दाईं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

ओर चँवर डुलाने वाला है। बाएँ कोने में ऊपर आकाश में देवी-देवता उड़ते हुए और बाजे बजाते दिखाए गए हैं। उनके नीचे स्त्री-पुरुष का एक जोड़ा पहाड़ पर बैठा है। दाएँ कोने में बन्दर, मोर और एक युगल अपने हाव-भाव से अपनी प्रसन्नता प्रकट कर रहे हैं।

दूसरी जगह बोधिसत्व एक सेवक का सहारा लिए हुए हैं। उनकी दाईं ओर एक राजा उन्हें बहुत से कमल भेंट कर रहा है। एक और जगह बोधिसत्व चक्र लिए खड़े हैं। इधर की अधिकांश चित्रकारी झड़ गई है। और बड़े-बड़े काले-काले सीमेंट के धब्बे दिखाई देते हैं।

जो चित्रकारी यहाँ रह गई है, उसी से अनुमान होता है कि काम कितना उच्चकोटि का और मेहनत का है। अब जो काम रह गया है, उसके उखड़ने से पहले बहुत से चित्रकार उसकी नकल कर लेना चाहते हैं। कुछ सरकार भी नकल कराकर संग्रहालयों या अजायबघरों में रखना चाहती है।

काम पर विजय

गुफा की बाईं दीवार पर 'बुद्ध और मार' का चित्र है। जिस दिन बुद्ध को ज्ञान हुआ, उस दिन मार बुद्ध को पथभ्रष्ट करने के लिए अपनी युवा लड़कियों और साथियों को ले गया था। साथियों ने तरह-तरह से उन्हें डराकर, धमका कर, भयावने चेहरे दिखाकर डिगाने की कोशिश की। लड़कियों ने उनके सामने नंगी नाचकर उन्हें विचलित करना चाहा। उनका ध्यान भंग करके उन्हें उनके पद से गिराना चाहा पर भगवान बुद्ध वज्रासन लगाए अटल और अचल बैठे रहे। मार अपनी सेना के साथ उनके ध्यान

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

में बाधा डालने का प्रयत्न करता रहा। आख़िर बुद्ध ने जब पृथ्वी को स्पर्श करके अपने वज्रासन का अधिकार माँगा, तब मार हार कर निराश हुआ और अपने संगी-साथियों सहित वहाँ से चला गया। यही दृश्य यहाँ दर्शाया गया है।

श्रावस्ती का चमत्कार

गुफा की दाईं दीवार पर बुद्ध के जादू का दृश्य है। बुद्ध भगवान जादू-टोने और तरह-तरह के चमत्कार दिखाने में विश्वास नहीं करते थे, फिर भी एक अवसर ऐसा आया कि उन्हें श्रावस्ती के राजा प्रसेनजित और दूसरे बहुत से लोगों के सामने चमत्कार दिखाना पड़ा। और यह चमत्कार था अलग-अलग मुद्राओं में अपनी अनगिनत आकृतियाँ बना लेना।

शिवि और कबूतर

दरवाज़े में घुसते ही बाईं ओर दीवार में शिवि जातक की कथा चित्रित है। एक बार बोधिसत्व ने राजकुमार शिवि के रूप में जन्म लिया था। राजकुमार शिवि दया और परोपकार के अवतार थे। एक बार एक बाज़ ने एक कबूतर को पकड़ लिया। उसे बचाने के लिए राजा शिवि ने अपने शरीर से कबूतर के वज़न के बराबर मांस काटकर बाज़ को दे दिया। चित्र में बाईं ओर कबूतर राजा की गोद में शरण लेता दिखाया गया है, दाईं ओर राजा तराजू लेकर खड़े हैं। यह कथा महाभारत से ली गई है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

श्रावस्ती में बुद्ध ने जब चमत्कार दिखाया तो चारों ओर बुद्ध ही बुद्ध दिखाई देने लगे

नाग-राजा––शंखपाल

दीवार के अन्त में शंखपाल जातक की कथा है जो महाभारत से ली गई है। एक बार बोधिसत्व मगध के राजा थे। नाग-राजा शंखपाल अक्सर वहाँ आश्रम में संन्यासी से भेंट करने आया करते थे। उस समय उनके सुख-वैभव पर बोधिसत्व की दृष्टि पड़ी। उनकी इच्छा हुई कि वे भी नाग-राजा बन पाते तो अच्छा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

था। इस इच्छा के वश हो उन्होंने नाग-राजा शंखपाल के रूप में जन्म लिया। पर इस जन्म में वे शीघ्र ही अपने वैभव से उकता गए। अपनी पिछले जन्म की इच्छा का फल मिटाने के लिए एक पहाड़ी पर जाकर लेट गए। साथ ही यह निश्चय किया कि जो भी चाहे उनके शरीर का हर तरह से उपयोग कर सकता है। एक बार १६ व्यक्तियों के एक दल ने उन्हें घायल कर दिया और उनके नथुनों में रस्सी डाल कर खींचते ले गए। परन्तु शंखपाल ने मुँह से उफ़ तक न की, न ही अपने को छुड़ाने की चेष्टा की। उसी समय एक व्यापारी गृहस्थ अलार वहाँ से निकल रहा था। उसके साथ ५०० गाड़ियाँ सामान की थीं। साँप की यह दशा देख कर उन्हें दया आई। उन्होंने उन १६ आदमियों को बहुत-सा धन और पशु देकर साँप को छुड़ाया और मुक्ति दिलाई। नाग-राजा शंखपाल अपने मुक्तिदाता को अपने पानी के महल में ले गए और एक साल तक उसे ख़ूब आनन्द भोग से रक्खा। उसके बाद अलार को वैराग्य हो गया और उसने संन्यास ले लिया। इस कथा को यहाँ विभिन्न दृश्यों द्वारा अंकित किया है।

महाजनक का वैराग्य

एक स्थान में 'महाजनक' जातक की कथा का चित्रण है। कथा यह है कि मिथिला का राजा लड़ाई में अपने भाई के हाथों मारा गया। उसकी रानी की गोद में एक लड़का था। वह उसे लेकर चम्पा भाग गई और वहीं उसका पालन-पोषण करने लगी। उसके लड़के का नाम महाजनक था। जब महाजनक बड़ा हो गया, तो वह व्यापार करने सुवर्णभूमि (आजकल के बर्मा देश) गया। लेकिन रास्ते में उसका जहाज़ टूट गया और एक देवी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

आकर उसे मिथिला ले गई। वहाँ उसने शिवाली से विवाह कर लिया। कुछ समय पीछे महाजनक ने वैराग्य ले लिया। शिवाली ने बहुत कोशिश की कि वह साधु न बने, पर उसकी सब कोशिशें बेकार गईं। आखिर उसने स्वयं भी वैराग्य ले लिया। इसी कथा को अनेक दृश्यों द्वारा चित्रित किया गया है।

एक स्थान पर दिखाया है कि एक युवक भिक्षु के वेश में खड़ा है। हाथ में कमण्डल है। चार स्त्रियाँ उसे नमस्कार कर रही हैं।

चींटियों के पहाड़ पर साँप की तपस्या

एक ओर चम्पय्या जातक की कथा दिखाई है। पिछले जीवन की इच्छा के वशीभूत होकर बोधिसत्व नाग।राजा चम्पय्या के रूप में उत्पन्न हुए। रेंगने वाले कीड़े के इस जीवन से तंग आकर वे मनुष्यों के संसार में चले गए। वहाँ चींटियों के पहाड़ पर जाकर तपस्या करने लगे। तभी एक सपेरे ने उन्हें पकड़ लिया और नचाने लगा। एक दिन की बात है कि जब वे वाराणसी के राजा के सम्मुख नाच रहे थे, तो अपनी स्त्री रानी सुमना के कहने पर राजा ने उन्हें मुक्त करवा दिया। आभार प्रदर्शन के लिए वे राजा को साँपों के देश में ले गए और सात दिन तक उनका खूब आदर-सत्कार किया। इसके बाद उन्हें हीरे-जवाहरात से लाद कर वापस भेजा। इस कथा को कई चित्रों में चित्रित किया गया है।

राजा के दरबार में विदेशी

एक स्थान पर एक राजा सिंहासन पर दरबारियों और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

दास-दासियों से घिरा बैठा है। दाईं ओर कुछ विदेशी दरवाजे से घुस रहे हैं, कुछ बाहर खड़े हैं, कुछ अन्दर हैं। वे चोंच वाली टोपी पहने हैं, कुछ के दाढ़ी भी है। कुछ राजा को बहुमूल्य भेंट चढ़ा रहे हैं, सबसे आगे वाला मोतियों की माला ले जा रहा है, दूसरा एक बटुआ, तीसरा हीरे-जवाहरातों से भरी एक थाली।

कुछ लोगों का मत है कि राजा चालुक्य वंश का राजा पुलकेशिन द्वितीय है। वह ईरान से आए हुए कुछ राजदूतों से भेंट कर रहा है। ये राजदूत ससानियन बादशाह खुसरू द्वितीय ने भेजे थे। इस चित्र से उस समय के विदेशियों के पहरावे और भेंट चढ़ाने की रीति का अच्छा ज्ञान होता है।

इस गुफा में पिछली दीवार पर बाईं ओर छतरी के नीचे दीक्षा लेने का दृश्य खींचा गया है। बाहर चार भिखमंगे दान की आशा में खड़े हैं। इसके बाईं ओर एक नवयुवक भिक्षु भिक्षा-पात्र लिए खड़ा है। उसके सामने चार स्त्रियां अपनी श्रद्धांजलि चढ़ा रही हैं। इसके दाईं ओर एक राजा सिंहासन पर बैठा है।

इस चित्रावलि के नीचे महाउम्मग जातक कथा को चित्रों में उभारा है। इस कथा में चार मनुष्य अपने को बहुत बुद्धिमान कहा करते थे। परन्तु थे बड़े दुष्ट। एक बार प्राज्ञ महोसध की पत्नी ने उन्हें हरा दिया और बहुत लज्जित किया।

एक स्थान पर लड़ते हुए दो बैल दिखाए हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

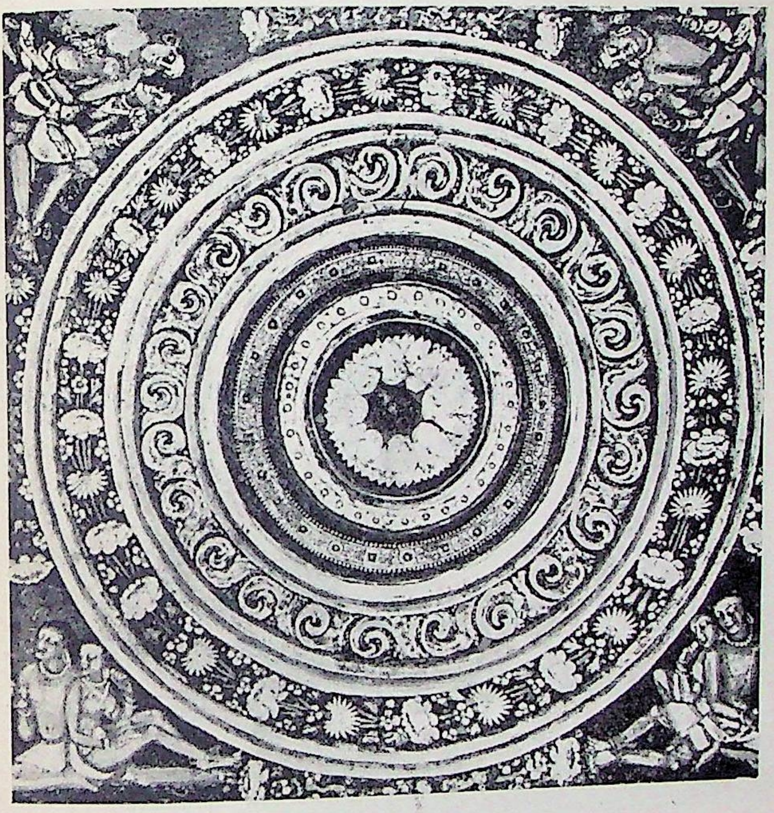

छत पर अंकित है प्रकृति और ज्यामितिक आकृति

छत की चित्रकारी सजावट के लिए है। वहाँ बेल-बूटे, फूल, लताएँ, पशु-पक्षी इत्यादि के तरह-तरह के डिज़ाइन हैं। इनके रंग इतने चमकीले और सुन्दर हैं कि वे हाल के ही बने मालूम होते हैं। दीवारों पर उन्होंने मानव स्वभाव को रेखांकित किया है, तो छत पर प्रकृति को। दीवारों पर चलती-फिरती आकृतियाँ बनाई गई हैं तो छत पर ज्यामितिक आकृतियाँ और उनके बीच में फूल-पौधे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

गुफा नं० २

यह गुफा ५०० से ५५० ईसवी में बनाई गई थी ।

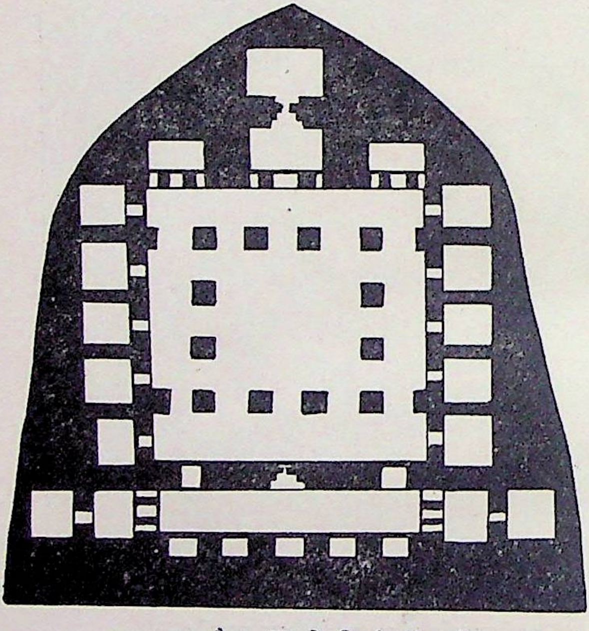

□-□ चैत्य, □ कोठरियाँ ■ खम्भे

इस गुफा नं० २ के आगे भी एक बराँडा है। इस बराँडे के दोनों ओर खम्भों वाली कोठरियाँ हैं। गुफ़ा में १२ खम्भे हैं और १२ कोठरियाँ हैं। एक चैत्य है। बराँडे में कहीं दास-दासियों सहित नाग-राजा को चित्रित किया गया है, तो कहीं बड़े-बड़े पेट वाले यक्षों को। एक स्थान पर बच्चा लिए हुए एक स्त्री है। दरवाज़े के चारों ओर खूब नक्काशी हो रही है। इसके खम्भों पर भी खूब बारीक काम हो रहा है।

बच्चे खाने वाली राक्षसी

एक कोठरी में हरिति की जातक कथा खुदी हुई है। हरिति एक राक्षसी थी। वह राजगृह के बच्चों को खा जाया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

करती थी। एक बार बुद्ध ने उसे सबक सिखाने की ठानी। एक दिन उन्होंने उसका सबसे प्रिय बालक छिपा लिया। हरिति ने क्रोध में आकर बुद्ध पर आक्रमण कर दिया। परन्तु अन्त में बुद्ध द्वारा पराजित होकर हरिति भिक्षुणी बन गई।

एक स्थान पर बालकों के तीन चित्र खुदे हैं। एक में तीन बच्चे खड़े ध्यानपूर्वक कुछ लिख रहे हैं, दूसरे में दो लड़के कुश्ती लड़ रहे हैं, तीसरे में ५ लड़कों का एक दल भेड़ों को लड़ाने की कोशिश कर रहा है।

यहाँ की भी सारी छत पर चित्रकारी बनी हुई है। यह चित्रकारी केवल सजावट के लिए है, पर कितनी बारीक, कितनी सुन्दर और कितनी चमकदार है। उसमें तरह-तरह के फूल, बेल, पत्ते, उड़ती हुई आकृतियाँ देखकर ऐसा लगता है जैसे किसी ने ईरानी कालीन बिछा दिया हो।

एक जगह २३ बत्तखों का एक समूह दिखाया गया है। प्रत्येक बत्तख का अपना ही ढंग है।

इस गुफा में काफ़ी स्थानों में भिन्न-भिन्न मुद्राओं में बुद्ध के असंख्य चित्र बना दिए हैं। इसमें तीन बड़े-बड़े बोधिसत्व भी दिखा दिए हैं।

बुद्ध का जन्म

एक तरफ बुद्ध के जन्म की कथा है। कपिलवस्तु के राजा शुद्धोधन की रानी माया को एक रात स्वप्न में श्वेत हाथी दिखाई दिया। प्रातः ही माया ने राजा शुद्धोधन से अपने स्वप्न का फल पूछा। इस पर राजा ने ब्राह्मणों को बुला भेजा और स्वप्न का फल निकालने को कहा। ब्राह्मणों ने भविष्य वाणी की कि रानी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

गर्भवती हो गई है। रानी से होने वाला पुत्र या तो चक्रवर्ती राजा होगा, या फिर संसार से विरक्त होकर बुद्ध बनेगा, जो सारे संसार को धर्म का मार्ग दिखाएगा। प्रसवकाल निकट आ जाने पर अपने पिता के घर जाते हुए मार्ग में ही रानी को प्रसव-वेदना हुई और उसने लुम्बिनी बाग में ही भगवान बुद्ध को जन्म दिया।

इस कथा के चित्रण के अलावा इसमें बोधिसत्व का स्वर्गीय निवास भी दिखाया है जहाँ से उतरकर वे माया के पेट में आए थे। इसके बाद एक चित्र में रानी व्यथित चेहरे से दो खम्भों के बीच खड़ी है। दूसरे चित्र में बुद्ध के जन्म होने पर शक्र अपनी बाहों में उन्हें लिए खड़े हैं और माया पेड़ की डाल पकड़े खड़ी हैं। जन्म के फौरन बाद ही बुद्ध भगवान ७ कदम चले थे। यहाँ चित्र में उनके ७ कदम कमल के ७ फूलों पर दिखाए हैं। इन्द्र उनके ऊपर छत्र लगाए हुए हैं।

सुनते हैं कि जब बुद्ध पूर्व की ओर चले, तो उन्होंने कहा, "मैं निर्वाण प्राप्त करूँगा," दक्षिण की ओर चलते समय उन्होंने कहा, "मैं सृष्टि में सर्व प्रथम रहूँगा," और अन्त में उन्होंने कहा, "मैं इस भवसागर को पार करूँगा।"

हंस जातक

बाईं दीवार पर हंस जातक की कथा चित्रित है। कथा यह है कि बनारस के राजा की रानी खेमा ने स्वप्न देखा। स्वप्न में एक सुनहरा हंस देखा जो उसे धर्म का उपदेश दे रहा था। राजा ने हंस को फंसाने के लिए झील बनवाई। इस झील में राजा के व्याध ने सुनहरे हंस और उसके साथी सुमुख को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

राजहंस बोधिसत्व ने मनुष्य के रूप में राजा-रानी को उपदेश दिया

पकड़ लिया। यह हंस और कोई नहीं स्वयं बोधिसत्व थे। उन दोनों को राजा-रानी के सामने पेश किया गया। बोधिसत्व ने राजा-रानी को धर्म का उपदेश दिया। दोनों ने उनकी बातों से सन्तुष्ट होकर उन्हें मुक्त कर दिया। यहाँ एक चित्र में राजहंस बोधिसत्व मनुष्य के रूप में लोगों के सामने प्रवचन कर रहे हैं।

विदुर पंडित की कथा

एक तरफ विदुर पंडित जातक की कथा है। इसमें यक्ष का पुत्र नाग राजकुमारी ईरनवती से विवाह करना चाहता था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

राजकुमारी ईरनवती की माता नागरानी विमला विदुर पंडित से उपदेश सुनना चाहती थीं। विदुर पंडित बोधिसत्व का ही रूप था। वे इन्द्रप्रस्थ के राजा के मन्त्री थे। रानी विमला को प्रसन्न करने के लिए यक्ष ने इन्द्रप्रस्थ के राजा को चौपड़ में हरा दिया और विदुर पंडित को पकड़ कर विमला के सामने पेश किया। विदुर पंडित ने नाग-राजा के दरबार में उपदेश दिया और ईरनवती और यक्ष का विवाह सम्पन्न हो गया।

सुनहरे मृग का धर्मोपदेश

इस कथा के बाईं ओर रूरु जातक की कथा है। इस कथा के अनुसार बोधिसत्व ने एक सुनहरे मृग के रूप में जन्म लिया। बनारस के राजा यज्ञदत्त की रानी ने स्वप्न में सुनहरे मृग को देखा। तब से उन्हें ज़िद हो गई कि हो न हो, मैं तो सुनहरे मृग से धर्म-दीक्षा लूंगी। रानी की इस ज़िद के कारण राजा ने घोषणा करवा दी कि जो कोई सुनहरे मृग को पकड़कर लाएगा, मैं उसे इनाम दूंगा। एक दिन एक आदमी को सुनहरे मृग ने डूबते से बचा लिया। इस आदमी ने मृग का उपकार तो भुला दिया और इनाम के लालच में मृग को पकड़ लिया। ज्यादातर लोग ऐसे ही कृतघ्न होते हैं। पर बोधिसत्व की महानता देखो। उन्होंने उस धोखेबाज़ को क्षमा कर दिया और राजा-रानी को धर्म का उपदेश दिया।

दया की भीख

इसी गुफा में दाईं ओर एक उच्चकोटि का चित्र है। इसमें एक राजा नंगी तलवार लिए किसी स्त्री को सजा देने की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मुद्रा में स्थित है। स्त्री ने घुटने टेक दिए हैं, और दया की भीख

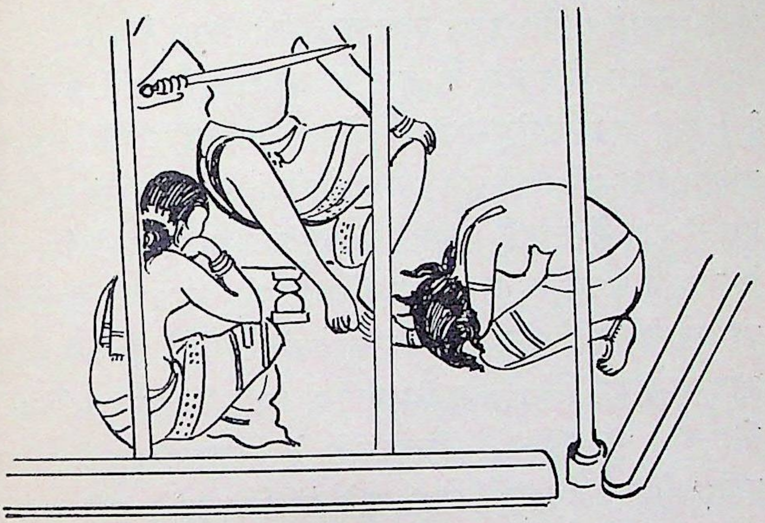

दया की भीख

माँग रही है। उसका चेहरा अत्यन्त दयनीय है। उसके दुबले-पतले शरीर का हर भाग प्रार्थना करता मालूम होता है। कपड़े बिखर कर फर्श पर गिर गए हैं। आसपास बैठे व्यक्ति भी राजा के क्रोध से भयभीत हो बैठे हैं। इस चित्र में भाव पूरी तरह उभरे हैं। इस चित्र का ऊपरला भाग झड़ गया है और वहाँ सीमेन्ट का पलस्तर चढ़ा दिया गया है।

गुफा नं० ४

यह गुफा अजन्ता का सबसे बड़ा विहार है। इसके बारे में शायद बड़ी-बड़ी योजनाएं बनी होंगी पर वे कभी समाप्त नहीं हो पाई और गुफा अधूरी ही रह गई।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

गुफा के अन्दर २४ खम्भे हैं। कुछ पर तो बहुत बारीक काम खुदा है। तीन तरफ बहुत सारी कोठरियां हैं।

अन्दर चैत्यालय में बुद्ध की बहुत भारी मूर्ति काटी हुई है। यहाँ बुद्ध उपदेश-मुद्रा में हैं। उपदेश-मुद्रा को धर्म-चक्र प्रवर्त्तन मुद्रा भी कहते हैं। उनके दोनों ओर बोधिसत्व खड़े हैं। एक के हाथ में बज्र है। इसलिए इन्हें बज्र-पाणि कहते हैं। दूसरे के हाथ में कमल का फूल है, इसलिए उन्हें पद्मपाणि कहते हैं। दरवाज़े के चारों ओर बुद्ध की मूर्तियां उत्कीर्ण हैं। गुफा के आरम्भ में बुद्ध की ६ विशाल मूर्तियां खुदी हैं। इन मूर्तियों के बीच-बीच में कहीं-कहीं चित्रकारी के चिह्न मौजूद हैं। इससे प्रतीत होता है कि पहले यहाँ सारे में चित्रकारी रही होगी। बाहर बराँडे में भी पहले सारी चित्रकारी रही होगी। परन्तु अब समय के साथ-साथ वे उखड़ती जा रही हैं।

गुफा नं० ६

यह गुफा एक चैत्य है। यह सिर्फ उपासना के लिए बनाई गई थी। रहने के लिए नहीं। दूसरे चैत्यों की तरह यह भी घोड़े के नाल की शक्ल में है। आगे से पीछे तक सारी छत खड़े नाल की तरह गोल है। चैत्य में २३ खम्भे हैं। गुफा का पिछला हिस्सा भी गोल है। उस गोलाई के बीच में काफी ऊँचा पीपा-नुमा गोल मंच है। इस मंच के ऊपर स्तूप है और उसके ऊपर तीन छतरियां बनाई गई हैं। इन तीन छतरियों को हरमिक भी कहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

गुफा की छत में बीच-बीच में पहले कभी लकड़ी की कड़ियां डाल रक्खी थीं। ये कड़ियां एक जैसी दूरी पर थीं। इनके डालने के लिए दीवार पर छेद भी बने हुए हैं। गुफा के मुख्य द्वार के ऊपर एक चैत्याकार खिड़की है। चैत्याकार का अर्थ है घोड़े के नाल की शक्ल की खिड़की। इस खिड़की में भी कभी लकड़ी की कड़ियां पड़ी थीं। ऊपर की खिड़की और दरवाज़ों के बीच में ५ चैत्याकार खिड़कियां हैं। इन सब खिड़कियों में भी उसी प्रकार लकड़ी की कड़ियां फिट थीं।

यह चैत्य ईसा से १०० साल पहले का बना हुआ है। गुफा के बाहर दरवाज़े के आसपास बुद्ध की मूर्तियां खुदी हुई हैं। पर ये बाद की खुदाई मालूम होती हैं। इस गुफा में चित्रकारी की दो-दो तहें हैं। प्राचीन कलाकार अक्सर पुराने चित्र को बिना मिटाए उसी पर दूसरा चित्र बना देते थे। जब ऊपरी चित्रों की तह झड़ गई तो भीतर से चित्रों की पुरानी तह निकल आई।

इस गुफा के एक चित्र में दीवारों से घिरा हुआ एक स्तूप है। कुछ भिक्षु और बुद्ध के उपासक जलूस बनाकर स्तूप को पूजने जा रहे हैं। यहाँ बुद्ध के बहुत-से चित्र हैं।

गुफा नं० १०

गुफा नं० १० एक चैत्य है। यह गुफा भी गुफा नं० ९ की तरह ऊपर से और पीछे से घोड़े के नाल की तरह गोल है।

यह चैत्य सबसे पहले बना था, और शायद इसकी कटाई ही सबसे पहले हुई थी। यह ९ नं० गुफा से बहुत बड़ा है। इसकी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

गहराई ६५ फुट, चौड़ाई ४ फुट और ऊँचाई ३६ फुट है। इसकी छत भी गुफा नं० ६ की छत की तरह लकड़ी की कड़ियों से भरी थी। इसमें स्तूप भी हैं।

इस गुफा में बाहर लिखा है कि यह गुफा वासिठिपुत कटहादी ने बनवाकर दान दी थी। इसका अर्थ है कि गुफा ईसा से २०० वर्ष पहले की है।

साम या श्रवणकुमार

इसमें बाईं ओर ११वें से १५वें खम्भों के पीछे साम जातक की कथा है। बोधिसत्व का नाम साम रखा गया। और अकेले वे ही अपने बूढ़े अन्धे माँ-बाप का सहारा थे। एक दिन जब वे नदी के किनारे घड़ा भर रहे थे तो बनारस के राजा ने शिकार के भ्रम में उन्हीं को तीर मार दिया। राजा को जब असलियत का भान हुआ, तो उसे बहुत खेद हुआ और हर प्रकार से अन्धे माँ-बाप की सहायता करने को तैयार हो गए। अन्धों का शोक और विलाप देखकर एक देवी का हृदय पसीज उठा। उसने मन्त्र पढ़कर साम को पुनः जीवित कर दिया और उसके माँ-बाप की आँखें भी ठीक कर दीं। यही कथा यहाँ चित्रित है।

छः दांतों वाले हाथी की रानी

दूसरे से १२वें खम्भे के पीछे तक छदन्त जातक की कहानी चित्रित है। कहानी यह है—एक बार बोधिसत्व ने छः दांतों वाले हाथी के रूप में जन्म लिया। इसलिए उनका नाम छदन्त पड़ा। वे हाथियों के राजा थे और हिमालय के निकट एक झील के किनारे रहते थे। उनके दो रानियां थीं। एक का नाम था

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

महासुभद्रा और दूसरी का चुलसुभद्रा। एक बार की बात है कि तीनों मिलकर बाहर चर रहे थे। छदन्त ने एक साल का पेड़ हिला दिया। पेड़ के हिलने से महासुभद्रा के ऊपर शहद और फल-फूल गिर पड़े परन्तु चुलसुभद्रा के ऊपर लाल चींटियां और टहनियां गिर पड़ीं। इस घटना से चुलसुभद्रा को भ्रम हुआ कि उसका स्वामी छदन्त महासुभद्रा को ही प्रेम करता है और उसके साथ पक्षपात भी करता है। यह सोचकर चुलसुभद्रा की इच्छा हुई कि वह मरकर बनारस की रानी हो जाए ताकि वह अपने पति छदन्त से बदला ले सके। हुआ भी यही। वह मरकर अपनी इच्छा के वश में होकर बनारस के राजा की प्रिय रानी बनी। पिछले जन्म का बदला लेने के लिए एक दिन वह बीमारी का बहाना करके पड़ गई। और इस बीमारी में रानी को खुश करने के लिए राजा छदन्त के दांत मंगाने के लिए राज़ी हो गया और सोनुत्तर नाम के शिकारी को छदन्त के दांत लाने के लिए भेज दिया। सोनुत्तर रानी को प्रसन्न करने के लिए दलबल सहित उस सुन्दर विशाल और सफेद हाथी का घात करने गया और पूरे सात साल बाद वह उसे घायल करने में सफल हुआ। पर बोधिसत्व ने अपने घाव और दर्द की परवाह न की। वे तो दूसरों का दुःख-दर्द मिटाने के लिए पैदा हुए थे। वे अपने दांत उखड़वाने के लिए तैयार हो गए। उनके दांत इतने मज़बूत थे कि सोनुत्तर से नहीं उखड़े। इस पर रानी का मन बहलाने के लिए छदन्त ने अपने दांत खुद उखाड़कर सोनुत्तर को दे दिए। दांत उखड़ते ही उनकी जीवन-लीला समाप्त हो गई। सोनुत्तर दांतों को पाकर बहुत खुश हुआ। उसने सोचा कि रानी इन दांतों को देखकर उसे बहुत-बहुत इनाम देगी। इधर रानी बड़ी अधीरता से इन दांतों की प्रतीक्षा कर रही थी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

पर हाय री नारी ! तेरे दिल की बात किसी ने न जानी । उन दांतों को देखते ही रानी को अपने पिछले जन्म के पति के प्रति

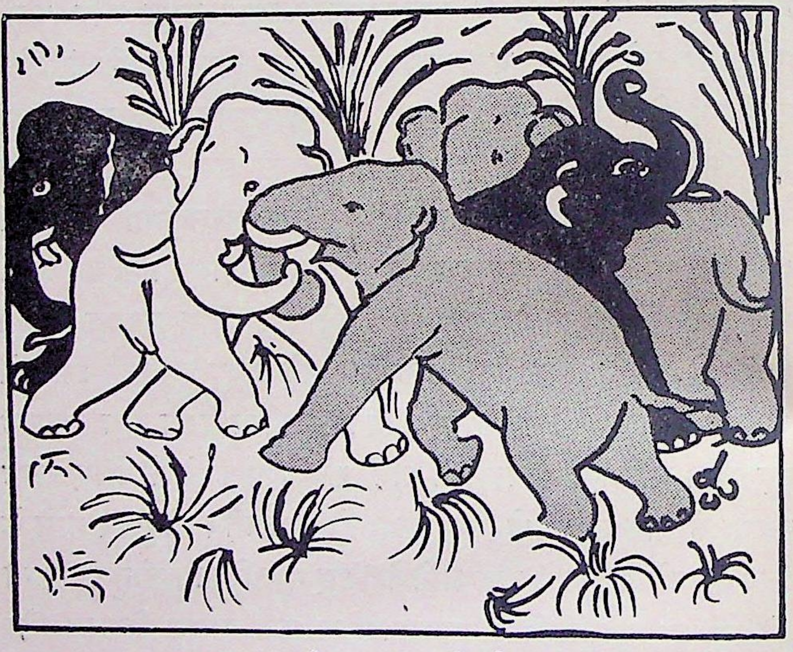

हाथी का अनुपम सौन्दर्य

मोह उत्पन्न हो गया और इस याद ने उसे फौरन मूर्च्छित और दुःखी कर दिया। राजा और दास-दासियां सब रानी की परिचर्या में जुट गए, पर रानी फिर न बच सकी और अपने पिछले जन्म के पति के मोह में उसने प्राण त्याग दिए।

इस विचित्र कथा में हाथी का सौन्दर्य अनुपम दिखाया गया है।

छदन्त की यह कथा अजन्ता में कई स्थानों में चित्रित की गई है। और जिस प्रकार बुद्ध का चित्र उन्होंने हमेशा दूसरी मानव-आकृतियों से अधिक बड़ा बनाया है, उसी प्रकार छदन्त

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हाथी का चित्र भी अन्य हाथियों से बड़ा बनाया जाता है—उसकी महत्ता दिखाने के लिए।

इस गुफा के कुछ चित्र बहुत पहले के बनाए चित्रों पर दुबारा बना दिए गए हैं।

ज्ञान की उपासना

एक अन्य चित्र में राजा, रानी, राजकुमारी और कई दासियाँ एक जलूस में चैत्य की ओर जा रही हैं। इसमें दो स्त्रियाँ

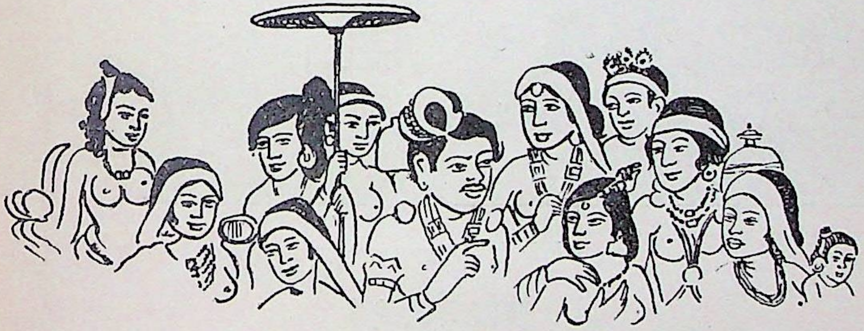

उपासना के लिए अधीर नर-नारी चैत्य की ओर प्रस्थान कर रहे हैं

बुद्ध की अस्थि-मंजूषा उठाए हैं। अस्थि-मंजूषा का अर्थ है वह सन्दूकची जिसमें बुद्ध भगवान के अवशेष हैं—उनकी कोई हड्डी या दाँत या बाल या राख। एक स्त्री पवित्र जल का घड़ा उठाए है और दूसरी अन्य कुछ वस्तुएँ। राजा-रानी का यह दल पवित्र बोधि वृक्ष का दर्शन कर रहा है। बोधि वृक्ष ज्ञान का चिह्न है। दूसरी तरफ भक्त-गण हैं। इस चित्र में सारी स्त्रियाँ और राजा-रानी सभी मोतियों के जड़ाऊ कंगन गहने पहने हुए हैं। वक्षस्थल सभी के खुले, पुष्ट और खूब उभरे हुए हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

शहतीरों के सिरे विद्याधर उठाए हुए हैं

गुफा नं० १६

इस गुफा के बाएँ सिरे की दीवार पर एक लेख खुदा है। उससे पता चलता है कि ४७५-५०० ई० में वाकाटक वंश के राजा हरिषेण के मंत्री वाराह देव थे। उन्होंने तपोधन तापसों के निवास के लिए इस गुफा का दान किया था। इसमें बीस खम्भे हैं। इसकी छत इस प्रकार काटी गई है कि लकड़ी की कड़ियों का भ्रम होता है। इन नकली कड़ियों और शहतीरों के सिरे गणों, संगीतज्ञों और उड़ते हुए विद्याधरों ने उठाए हैं।

इस गुफा के मध्य में उपदेश-मुद्रा में बुद्ध की मूर्ति विराजमान है। उनके पाँव सामने को लटके हुए हैं, अतः इस मुद्रा को प्रलम्बपाद मुद्रा भी कहते हैं। इसके चारों ओर प्रदक्षिणा-पथ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

है। भारत में प्रायः सभी मूर्ति-उपासक अपनी उपास्य मूर्ति के चारों ओर चक्कर काटकर अपनी श्रद्धा दिखाते हैं। और चारों ओर चक्कर काटने को प्रदक्षिणा कहते हैं।

इस गुफा में बाईं ओर नन्दकुमार के वैराग्य की कथा चित्रित है जिसमें उसकी स्त्री के गहरे शोक को कलाकार ने बहुत उभारा है। ज्ञान होने के बाद जब बुद्ध अपने चचेरे भाई नन्द के घर भिक्षा माँगने गए तो नन्द अपनी स्त्री के शृंगार में लीन थे। बुद्ध उसे अपने विहार में ले गए और उसे भिक्षु बना लिया। परन्तु नन्द अपनी स्त्री को न भूल सके। इस पर बुद्ध उन्हें स्वर्ग में ले गए और अनेक सुन्दर अप्सराएं दिखाईं और कहा कि अगर तुम बौद्ध-धर्म का पालन करो तो तुम्हें ये सब अप्सराएं मिल जाएगीं। सुन्दर नारी के लालच में नन्द ने कड़ी तपस्या की। परन्तु उसके हृदय से स्त्री का मोह न छूटा। इस पर अनेक भिक्षुओं ने उसकी खिल्ली उड़ाई। इस खिल्ली से नन्द को आत्म-ग्लानि हुई और सच्चा वैराग्य हो गया।

गुफा नं० १७

यह गुफा वाकाटक वंश के राजा हरिसेन के एक श्रद्धालु मंडलाधीश ने बनवाई थी।

इस गुफा में बीच के दो खम्भों पर बहुत बढ़िया काम हो रहा है। चैत्य के दरवाज़े पर फूल-पत्ते, बुद्ध की आकृतियाँ, स्त्रियाँ, द्वारपाल और कमल के फूल खूब बने हैं।

इस गुफा में कुछ चित्र बहुत ही सुन्दर हैं। दरवाज़े पर सबसे ऊपर ७ मानुषी बुद्ध और भावी बुद्ध मैत्रेय की आकृतियाँ दिखाई हैं। वे सब बोधि वृक्षों के नीचे बैठे हैं। वे ७ बुद्ध हैं—१. विप-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

रानी के साथ भोग-विलास में लिप्त बेस्सन्तर को वैराग्य सूझा

शियन्, २. शिखिन, ३. विश्वभू, ४. क्रकुच्छन्द, ५. कनकमुनि, ६. काश्यप, और ७. शाक्यमुनि।

विलासी का वैराग्य

बाईं ओर बेस्सन्तर जातक की कथा है। इसमें बेसन्तर राजा अपनी रानी के साथ भोग-विलास में दिन बिता रहा था कि उसे वैराग्य की सूझी। चित्र में वह रानी को मधु पात्र दे रहा है। राजा के भिक्षु हो जाने की चिन्ता से रानी और सारे सभासदों के चेहरों पर उदासी और शोक छा गया। राजा ने तब 'सात सौ' का दान दिया। चित्र में बाईं ओर दान लेने के लिए आए हुए भिखमंगों, साधु-संन्यासियों और लोगों की विविध वेश-भूषा और चेहरों के भाव देखने लायक हैं। कलाकार ने सबके चित्रों में हूबहू उनके चरित्र के उपयुक्त भाव भर दिए हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

बराँडे की बाईं दीवार पर खूब बड़ा जीवन-चक्र दिखाया है। बौद्ध दर्शन में जीवन-मरण के १२ कारण बताए हैं। इन कारणों को द्वादश-निदान भी कहते हैं। इन कारणों से आदमी जन्म-मरण के चक्कर में बँधा रहता है। इसलिए १२ तीलियों वाले चक्र को जीवन-चक्र कहते हैं। तिब्बत में बौद्ध लोग रोज़ सबेरे इस चक्र को ज़रूर चलाते हैं। ताकि वे अपने जन्म-मरण के कारणों को याद रक्खें और उनसे मुक्ति पाने की चेष्टा करें।

अप्सरा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

द्वार के दाहिनी ओर अप्सराओं के चित्र चित्रकार की अद्भुत प्रतिभा के प्रमाण हैं। यद्यपि जगह-जगह पलस्तर कर रखा है, फिर भी चित्र का सौन्दर्य आँखों को आकर्षित कर लेता है।

पागल हाथी पर प्रभाव

दाईं ओर बुद्ध का चमत्कार दिखाया गया है। बुद्ध ने ८ बड़े-बड़े चमत्कार दिखाये थे। उनमें से एक है नलगिरि का वशीकरण। कहानी यह है कि बुद्ध का एक चचेरा भाई था देवदत्त। देवदत्त ने अजातशत्रु के साथ मिलकर बुद्ध को मरवाने का एक षड्यन्त्र रचा। एक दिन जब बुद्ध राजगिरि में कहीं जा रहे थे तो देवदत्त ने मौका देखकर एक पागल हाथी को सड़क पर छोड़ दिया। इस हाथी का नाम था नलगिरि। देवदत्त ने सोचा था कि नलगिरि बुद्ध को फ़ौरन मार डालेगा। पर आश्चर्य! महा आश्चर्य! मारना तो दूर उल्टे पागल हाथी बुद्ध के बस में हो गया। उसने उन पर हमला करने के बजाए, उनके आगे सिर झुका दिया। इस पर बुद्ध ने प्यार से उसे थपथपा दिया।

बराँडे की दाईं दीवार पर बुद्ध सभा को उपदेश दे रहे हैं।

बराँडे में छः आकृतियों का एक समूह है। इसमें उन छहों को ऐसे खड़ा किया है कि यद्यपि हर आदमी के एक ही हाथ है, फिर भी हरेक आदमी के दो हाथ मालूम होते हैं।

गुफा की दीवारों पर बहुत सारी जातक कथाएँ चित्रित हैं। दरवाज़े में घुसते ही बाईं ओर छदन्त जातक की कथा है। यह कथा आप पहले ही सुन चुके हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

महाकपि का त्याग

खिड़की के ऊपर और खिड़की की बगल में महाकपि जातक की कहानी के कई चित्र हैं। इस कथा में बोधिसत्व ने बन्दरों के राजा के रूप में जन्म लिया। ये अपने दल-बल सहित गंगा के किनारे रहते थे। वहाँ एक आम का पेड़ था। ये सब मिलकर खूब फल तोड़ते और खाते थे। साथ ही उछल-कूद भी मचाते थे। बनारस के राजा ब्रह्मदत्त को यह अच्छा नहीं लगा। राजा ने बन्दरों को पकड़वाने के लिए जाल बिछवा दिया। बोधिसत्व ने जब अपने दल पर विपत्ति आती देखी तो उन्होंने एक पुल बनवाया। यह पुल बाँस का था और छोटा पड़ता था। इसलिए पुल की कमी को पूरी करने के लिए बोधिसत्व ने अपना शरीर बाँस के आगे तान दिया और बन्दरों से कहा कि झटपट पुल पार कर जाओ। बुद्ध का प्रतिद्वन्द्वी और दुश्मन देवदत्त भी एक बन्दर के रूप में पैदा हुआ था। देवदत्त ने दुश्मनाई निकालने का अच्छा मौका देखा। वह झट बोधिसत्व के तने हुए शरीर पर कूद पड़ा। इससे बोधिसत्व का दिल टूट गया। ब्रह्मदत्त ने महाकपि अर्थात् बन्दरों के राजा बोधिसत्व का जब यह त्याग देखा, तो उन्हें धीरे से नीचे उतारा। महाकपि बोधिसत्व ने मरने से पहले राजा ब्रह्मदत्त को उपदेश दिया।

छोटे दरवाजे के पास 'हस्ति जातक' की कथा है। हस्ति जातक कथा में भूखे यात्री दयालु हाथी के शव को खा रहे हैं।

हंसों की घबराहट

आगे हंस जातक की कथा है। कमल के फूलों से भरी एक झील थी। झील के किनारे घूमते-घामते एक शिकारी आ पहुँचा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

उस शिकारी ने झील से दो हंसों को निकाल लिया। दोनों हंसों के शिकारी के हाथों फँस जाने से शेष हंसों में बावेला मच गया और वे घबरा कर इधर-उधर भागने लगे। इस दृश्य में हंसों की घबराहट देखने लायक है। अगले दृश्य में दोनों हंस सिंहासन पर विराजमान हैं। बोधिसत्व राजा-रानी और दास-दासियों को उपदेश देते हैं।

वेस्सन्तर का दान

बाईं दीवार पर, दोनों खम्भों के बीच बेस्सन्तर जातक की कथा चित्रित है। एक बार बोधिसत्व ने राजा के घर जन्म लिया। बोधिसत्व का नाम बेस्सन्तर रखा गया। उनके पास एक विचित्र हाथी था। इस हाथी में एक अद्भुत शक्ति थी। इस शक्ति से सूखे के समय बारिश हो जाती थी। एक बार कलिंग देश के ब्राह्मण बेस्सन्तर के पास सहायता के लिए आए। बोधिसत्व का तो काम ही था दूसरों का दुःख मेटना। उन्होंने झट इस विचित्र हाथी को कलिंग देश के ब्राह्मणों के हाथ सौंप दिया। इस पर बोधिसत्व बेस्सन्तर की अपनी प्रजा बहुत क्रोधित हो उठी और राजा से कहा कि बेस्सन्तर को मार डाले। राजा ने उन्हें मारा तो नहीं, पर हां बंक पर्वत पर भेज दिया। बेस्सन्तर अपनी स्त्री और बच्चों को रथ में ले चल पड़े। मार्ग में बेस्सन्तर ने मंगतों को पहले तो अपने घोड़े दे दिए, फिर रथ भी दे दिया और खुद पैदल अपनी झोंपड़ी में चले गए। यह झोंपड़ी उन्हें शक देवता ने दी थी। इसके बाद बेस्सन्तर ने जूजक नाम के ब्राह्मण को अपने बच्चे दे दिए। फिर किसी और ब्राह्मण को अपनी स्त्री दे दी। जिस ब्राह्मण को उन्होंने अपनी स्त्री दी थी,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

वह और कोई नहीं, शक देवता ही थे। शक देवता ब्राह्मण का रूप धर कर बेस्सन्तर की परीक्षा लेने आए थे। वे बोधिसत्व की दान की प्रवृत्ति देखकर बहुत प्रसन्न हुए। और उन्होंने अपना असली रूप प्रगट कर दिया और अपनी कृपा से बेस्सन्तर के स्त्री-बच्चे सब वापस करवा दिए और राजपाट भी दिला दिया।

कृतघ्न पर करुणा

एक स्थान पर महाकपि जातक की कथा है। कथा इस प्रकार है। एक बार की बात है कि बोधिसत्व ने एक बन्दर के रूप में जन्म लिया। उनका नाम पड़ा महाकपि। एक दिन एक ग्वाला अपनी गाय-भैंसों को ढूँढते-ढूँढते एक गढ़े में गिर पड़ा। महाकपि ने किसी प्रकार उन्हें बाहर निकाल दिया। पर वह ग्वाला बड़ा ही कृतघ्न निकला। दुनिया ही ऐसी है। क्या किया जाए। तो जब महाकपि सो रहा था उस ग्वाले ने महाकपि को एक पत्थर खींच कर मारा। इतने में ही महाकपि की आँख खुल गई और वे वार बचा गए। वह ग्वाला रास्ता भूल गया और जंगल में भटक गया। सबका भला करने वाले महाकपि ने ही आकर उनका भला किया और उन्हें रास्ता दिखाया। दुनिया में जो भला करने निकलते हैं वे सदैव सब का ही भला करते हैं, चाहे वह कोई पुण्यात्मा हो, चाहे कोई पापी।

नरभक्षी सौदास

एक स्थान पर सुतसोम जातक की कथा चित्रित है। इस कथा के अनुसार एक बार बोधिसत्व ने कुरु राज्य में राजकुमार सुतसोम के रूप में जन्म लिया। एक और राजा था। उसका

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

नाम था सुदास। राजा सुदास एक बार शिकार खेलने निकला। उसने अपना दल एक हिरण के पीछे छोड़ दिया। कुछ दूर जाकर राजा सुदास अपने साथियों से बिछुड़कर घने जंगल में चला गया। वहाँ एक शेरनी के साथ उसकी मैत्री हो गई। उस शेरनी से राजा सुदास के एक पुत्र पैदा हुआ। उसका नाम सौदास पड़ा। सौदास धीरे-धीरे बड़ा हुआ। उसने पढ़ना-लिखना सीखा। अस्त्र-शस्त्र चलाने सीखे। राजकुमार सौदास को योग्य जान राजा सुदास ने उसे राजपाट भी सौंप दिया। पर एक शेरनी से पैदा होने के कारण उसे मनुष्य का मांस खाने की आदत थी। आए दिन उसके आहार के लिए प्रजा का कोई न कोई आदमी मारा जाता। उसकी इस आदत से प्रजा बहुत दुःखी थी। राजा सौदास ने अपने आहार के लिए एक सौ एक आदमी पकड़वा लिए थे। इन आदमियों में सुतसोम का रूप धरे बोधिसत्व भी शामिल थे। आखिर में सुतसोम ने राजा सौदास को धर्म का उपदेश देकर उनकी मांस खाने की आदत छुड़वाई।

सरभमिग जातक

एक स्थान पर सरभमिग जातक की कथा चित्रित है। इस कथा में बोधिसत्व ने एक हिरण के रूप में जन्म लिया। एक बार बनारस का राजा शिकार के लिए निकला। राजा ने हिरण को देखकर उसका पीछा किया। पीछा करते-करते वह एक गहरे गढ़े में गिर गया। बोधिसत्व ने पहले तो पत्थर ढो-ढोकर बोझ उठाने का अभ्यास किया और अन्त में राजा को अपनी पीठ पर बिठाकर बाहर छोड़ आए।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मच्छ जातक

इस कथा के दाईं ओर मच्छ जातक कथा के कई चित्र हैं। इसमें बोधिसत्व मच्छ के रूप में जन्म लेते हैं। एक बार सूखा पड़ा। इससे तालाब का सारा पानी सूख गया। पानी सूखने से सारी मछलियां धड़ाधड़ मरने लगीं। चिड़ियां आ-आकर मछलियों को खाने लगीं, इससे बची हुई मछलियां बहुत दुःखी हुईं। उनका दुःख मिटाने के लिए बोधिसत्व ने इन्द्र देवता से प्रार्थना की। इन्द्र ने प्रसन्न होकर वर्षा की और तालाब की सारी मछलियों को जीवन-दान दिया।

मातृभक्त हाथी

सरभमिग जातक के नीचे मातिपोसक जातक की कथा का चित्रण है। एक बार बोधिसत्व ने एक हाथी के रूप में जन्म लिया। उनका नाम मातिपोसक पड़ा। मातिपोसक हाथी के जंगल में एक दफा एक आदमी भटक गया। हाथी ने उसे अपनी पीठ पर चढ़ाकर बाहर निकाल दिया। बनारस के राजा ब्रह्मदत्त का अपना हाथी मर गया था। इस आदमी ने जाकर राजा से मातिपोसक हाथी का बखान किया। राजा ने झट मातिपोसक हाथी को पकड़वा मंगाया। हाथी की माँ अन्धी थी। इसलिए हाथी को बहुत दुःख हुआ कि अब उसे कौन खिलाए-पिलाएगा।

माँ के शोक में उसने खाना-पीना छोड़ दिया और अधमरा हो गया। राजा ने जब यह सुना तो उसे दया आई। उसने हाथी को छुड़वा दिया। हाथी दौड़ता हुआ माँ के पास पहुँचा, जंगल से उसके लिए खाना लिया, खिलाया, फिर उसे नदी में ले जाकर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

खूब नहलाया और खूब सेवा की।

यहाँ की छत पर प्रकृति, फूल, पत्तों और वनस्पति के चित्रों की भरमार है। इसके चटकदार रंग इतने काल बीत जाने पर भी फीके नहीं पड़े।

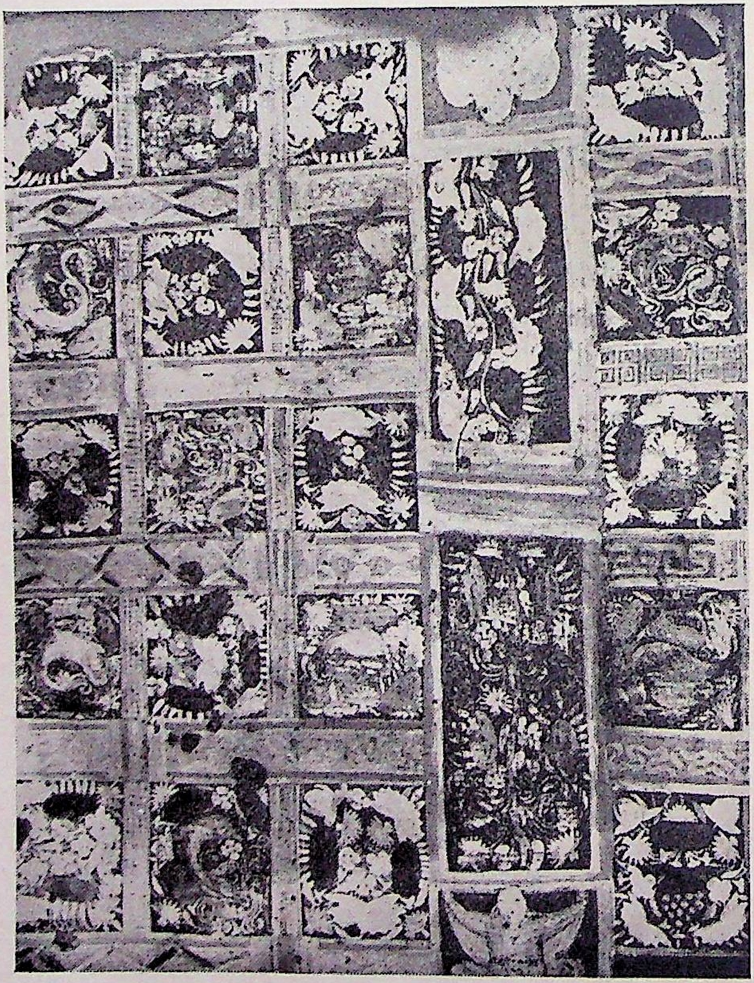

छत की चित्रकारी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

बन्दर और भैंसा

एक जगह महिष जातक की कथा चित्रित है। एक बार बोधिसत्व ने भैंसे के रूप में जन्म लिया। वे अक्सर एक पेड़ की छांह में आराम किया करते थे। उसी पेड़ पर एक बन्दर भी रहता था। बन्दर भैंसे के रूप वाले बोधिसत्व को बहुत तंग करता, पर बोधिसत्व अपनी भलाई के कारण बन्दर से कुछ नहीं कहते। बन्दर की आदत बिगड़ गई। एक दफा उसी पेड़ के नीचे कोई दूसरा भैंसा आ निकला। बन्दर ने अपनी आदत के वश इसे भी छेड़ा। इस भैंसे ने आव देखा न ताव, झट बन्दर को मार गिराया।

राक्षसियों का रूपजाल

एक जगह बलास जातक की कथा चित्रित है। एक बार सिंहल का एक व्यापारी पाँच सौ व्यापारियों के साथ जहाज़ में जा रहा था। रास्ते में तूफ़ान आया और जहाज़ डूब गया। ये व्यापारी एक द्वीप में चले गए। उस द्वीप में राक्षसी रहा करती थीं। राक्षसियों को आदमी का मांस बहुत भाता था। इतने आदमियों को अपने द्वीप में आते देख उनके मुँह में पानी भर आया। राक्षसियों ने उन सब आदमियों को फँसाने के लिए झट सुन्दर-सुन्दर औरतों का रूप धारण कर लिया। सिंहल के साथ एक घोड़ा भी था। यह घोड़ा और कोई नहीं खुद बोधिसत्व थे। घोड़े ने सिंहल को वहाँ से निकल भागने का इशारा किया। सिंहल बुद्धिमान आदमी था। वह अपने कुछ साथियों को लेकर घोड़े की पीठ पर सवार हो भाग निकला। सिंहल के बाकी आदमी उन औरतों के रूप के जाल में फँस कर वहीं रह गए।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

जब उनके निकल भागने का कोई रास्ता न रहा तो राक्षसियाँ अपने असली रूप में आ गईं। वे सब आदमी बहुत घबराए पर अब पछताए होत क्या जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत। औरत के रूप पर तो बड़े-बड़े ऋषि-मुनि अपनी तपस्या से डिग गए थे, फिर ये तो थे मामूली व्यापारी। राक्षसियाँ एक-एक करके सबको खा गईं। उनमें से एक राक्षसी ने बहुत ही सुन्दर स्त्री का रूप रख कर सिंहल का घर तक पीछा किया। साथ में एक बच्चा भी ले लिया। सिंहल के घर में जाकर सबसे कहा कि मैं सिंहल की स्त्री हूँ और यह उसका बच्चा है। पर सिंहल ने उसे फटकार कर बाहर निकाल दिया। इस पर वह राक्षसी राजा के पास फरियाद करने लगी। वहाँ राजा ही राक्षसी के रूप पर मोहित हो गया और उसे अपने महल में रख लिया। राजा के मन्त्री ने मना भी किया पर राजा ने उसकी एक न सुनी। भला औरत के सामने किसी और की सुनी जा सकती है? औरत चीज़ ही ऐसी है। आख़िर राजा का भी वही अन्त हुआ जो बाकी व्यापारियों का हुआ। खाली वही नहीं मारा गया बल्कि उसके महल के सारे आदमियों को भी राक्षसियों ने खा डाला। राक्षसियों ने महल के सब दरवाज़े अन्दर से बन्द कर लिए। महल के ऊपर लाशों पर गिद्ध मँडराने लगे। उन्हें देखकर सारी प्रजा बड़ी परेशान हुई। पर सिंहल ने एक सीढ़ी लगाई और झट महल के ऊपर चढ़ गया और राक्षसियों को बाहर खदेड़ा। बाद में सिंहल ने उस द्वीप पर अपनी सेना भेजी। उन्हें हुक्म दिया कि सब राक्षसियों को मार डालो। वहाँ बड़ा भारी युद्ध हुआ और सिंहल की जीत हुई। सबने मिल कर सिंहल को उस द्वीप का राजा बना दिया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

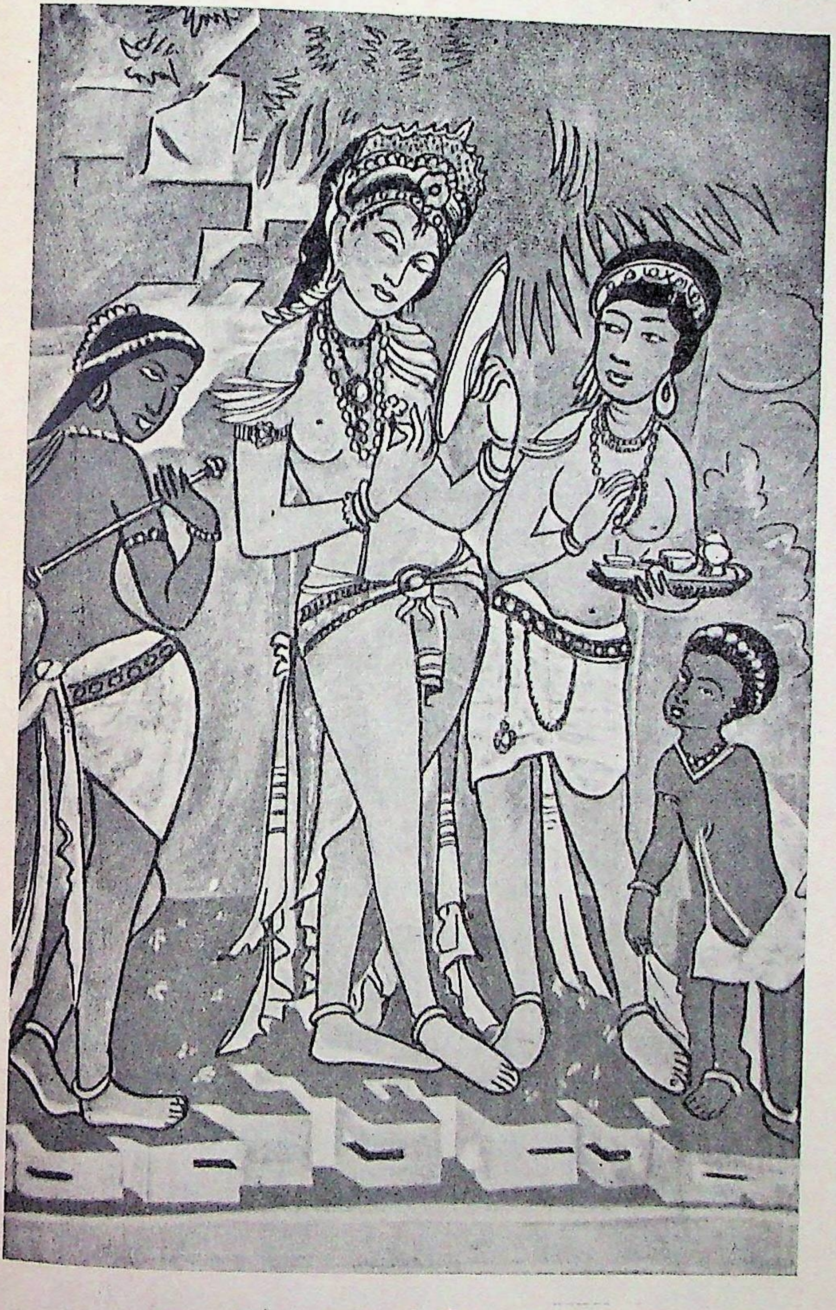

शृंगार में लीन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

इस कथा के बाद शृङ्गार करती हुई एक स्त्री का चित्र है। इस चित्र में उसके पास की दीवार पर शिवि जातक की कथा है। शिवि जातक की कथा पहले भी आ चुकी है जिसमें उन्होंने एक पक्षी को बचाने के लिए अपने शरीर से मांस काट कर दे दिया था। यहाँ वाली चित्रावलि की कथा यह है कि शिवि ने यह प्रतिज्ञा की थी कि अगर कोई मेरे शरीर का कोई भी अंग माँगेगा तो मैं दे दूँगा। एक बार शक देवता ने इनकी परीक्षा लेनी चाही। वे एक अन्धे ब्राह्मण का रूप धर कर इनके पास आए और इनसे आँखें माँगीं। शिवि के सगे-सम्बन्धियों ने और मन्त्रियों ने राजा को बहुत समझाया कि कहीं बिना आँखों के भी राजपाट चलाया जा सकता है? अपने लिए नहीं तो प्रजा के लिए ही मान जाइए। पर शिवि तो दानी कर्ण से भी बढ़-चढ़ के थे। उन्होंने अपनी प्रतिज्ञा के आगे किसी की बात नहीं रखी और झट आँखें निकलवा कर दे दीं। शक ने उनके इस त्याग पर प्रसन्न होकर उनकी आँखें उन्हें वापस कर दीं।

मांसाहारी को शिक्षा

दरवाज़े के पास दीवार पर निग्रोघमिगा जातक की कथा का चित्रण है। एक बार की बात है कि बनारस का राजा ब्रह्मदत्त हिरण के मांस का बहुत शौकीन था। उसकी रसोई में रोज़ हिरण का मांस पकता था। उसके राज्य में दो हिरण थे—बनयान हिरण और शाखा हिरण। वे दोनों अपने-अपने दलों के राजा थे। बनयान हिरण के रूप में स्वयं बोधिसत्व ने जन्म ले रखा था। राजा की हिरण खाने की आदत के लिए ज़रूरत से ज़्यादा हिरण न मारे जाएँ, इसके लिए उन दोनों नेताओं ने यह तय

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

किया कि बारी-बारी से एक हिरण खुद राजा के महल में चला जाया करे। और कुछ दिन तक यह सिलसिला चलता भी रहा। राजा ने दोनों दलों के नेताओं अर्थात् बनयान हिरण और शाखा हिरण को अभय दान दे रखा था और अपने नौकरों से कह रक्खा था कि किसी भी तरह उन दोनों को नहीं मारना। एक दफ़ा एक गर्भवती हिरणी की बारी आई। इस पर वह बहुत रोई-धोई, गिड़गिड़ाई। कहने लगी कि आज मेरी जगह कोई और चला जाए। क्योंकि मेरे आज जाने से दो की जान जाएगी, और मैं कुछ दिन ठहर जाऊँगी तो यह बच्चा बच जाएगा, मैं अकेली मरूँगी। पर किसी ने उसकी प्रार्थना पर कान नहीं दिया। सब कहने लगे कि नहीं तुम्हारी बारी है, तुम्हीं को जाना पड़ेगा। यह सब देखकर बोधिसत्व को बहुत तरस आया। उसने उस गर्भिणी हिरणी को दिलासा दिया और खुद उसकी जगह रसोइए के सामने जा खड़े हुए। रसोइया बोधिसत्व को देखकर भागा-भागा राजा के पास गया और सब हाल कह सुनाया। बोधिसत्व के त्याग की कथा सुनकर राजा ब्रह्मदत्त द्रवित हो उठे। उन्होंने सारे हिरणों को अभय दान दिया और अपने नौकरों को आदेश दिया कि अब कोई भी आदमी किसी भी हिरण को न मारेगा। जिस स्थान पर हिरणों को अभय दान दिया गया था वह मिग्गदा (मृगदाव) कहलाने लगा। उसी स्थान पर अब सारनाथ बस गया है।

आगे की दीवारों पर बुद्ध के जीवन की घटनाएँ चित्रित हैं। दाईं दीवार पर श्रावस्ती का चमत्कार दिखाया गया है। जिसमें बुद्ध ने अनेक बुद्धों का रूप धरकर दिखाया था। एक स्थान में गयस्त्रिंश स्वर्ग में बुद्ध अपनी माँ को सिखा रहे हैं। उसके नीचे बुद्ध उस स्वर्ग से सांकास्य में उतर रहे हैं। उनके साथ शक्र

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

और ब्रह्मा हैं। यह सीढ़ी शक्र ने ही लगाई थी। इस चित्र के नीचे सांकास्य में बड़ी भारी सभा हो रही है। इस सभा में बुद्ध सबको अपने शिष्य सारिपुत्र की बुद्धिमत्ता का परिचय दे रहे हैं।

यशोधरा से भिक्षा

दरवाजे के बाईं ओर बुद्ध अपना कमण्डलु हाथ में लिए खड़े हैं। उनके सामने उनकी स्त्री यशोधरा अपने पुत्र राहुल के साथ खड़ी है। यशोधरा अपने राहुल को आगे बढ़ाती है और कहती है कि अपने पिता से अपने पैतृक अधिकारों को माँग लो। पर बुद्ध ? उनके पास अब देने के लिए कुछ नहीं है। वे तो खुद ही कमण्डलु आगे बढ़ाकर भिक्षा माँग रहे हैं।

एक या दो

बरामदे की छत पर छः आदमियों का एक समूह है। उनके हाथों को इस तरह से बना रखा है कि यद्यपि हरेक आदमी का एक ही हाथ है, फिर भी देखने में हरेक के दो हाथ प्रतीत होते हैं।

शिकारियों के हाथ कटे

एक स्थान में राजा ने एक हिरण को पकड़ने वाले को पुरस्कार देने की घोषणा की। शिकारियों ने राजा को हिरण के बारे में सूचना दी। राजा अपने नौकरों और शिकारियों के साथ जंगल में उस स्थान पर पहुँचा जहाँ हिरण रहता था, पर जैसे ही शिकारी हिरण को पकड़ने की कोशिश करते हैं वैसे ही उनके हाथ कटकर नीचे गिर पड़ते हैं। राजा को बहुत अचम्भा हुआ। वह आदर के साथ हिरण को अपने रथ में बिठाकर घर ले आया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

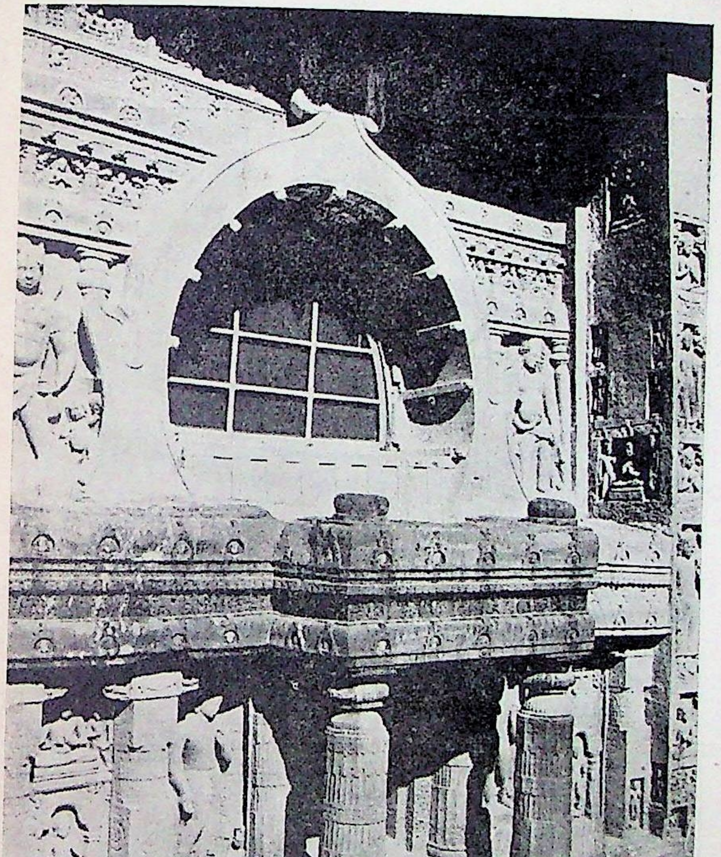

गुफा नं० १९ का मुख्य द्वार

गुफा नं० १९

इसके प्रवेश के लिए खम्भोंदार एक सुन्दर पोर्च काटा गया है। इस पोर्च के दोनों ओर बुद्ध ही बुद्ध की मूर्तियाँ काटी हुई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हैं। कहीं बुद्ध खड़े हैं तो कहीं बैठे हुए उपदेश मुद्रा में हैं। यहाँ चित्र में इन मूर्तियों का विशाल रूप दिखाया गया है। इन दोनों

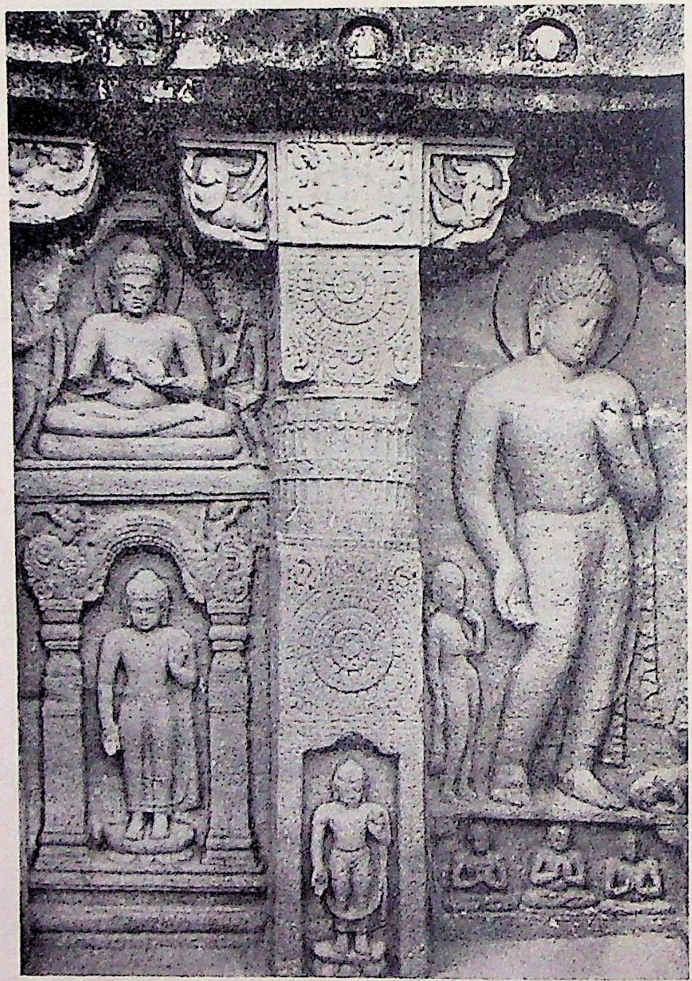

बुद्ध की विविध मुद्राएँ

चित्रों से स्पष्ट है कि इस गुफा के बाहर भी मूर्तिकार ने कला की कैसी छटा दिखाई है और मन में बसे भगवान बुद्ध को बाहर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अनेक आसनों में प्रगट किया है। यहाँ सजावट के लिए कोई दूसरा विषय न लेकर बुद्ध भगवान को सर्वत्र उभारा है।

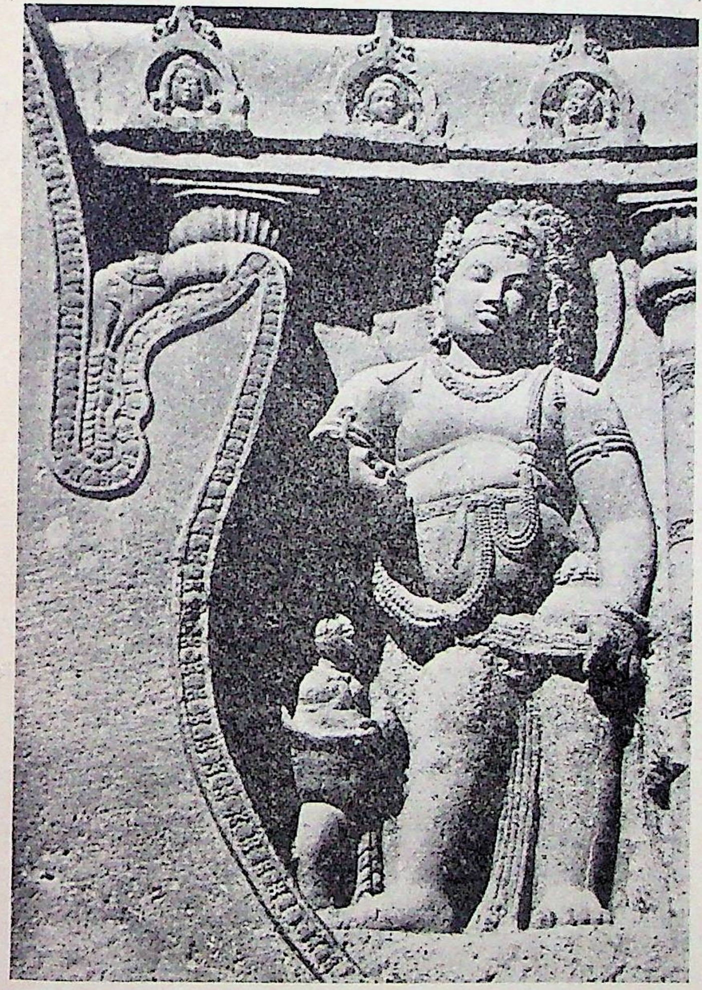

यक्ष मूर्तियाँ

गुफा द्वार के ऊपर नाल के आकार का एक सुन्दर वातायन है। इस वातायन के दोनों ओर तोंद वाली यक्ष मूर्तियाँ हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

इस गुफा से कलाकार की बुद्ध के प्रति अपार भक्ति और श्रद्धा का आभास मिलता है।

अन्दर स्तूप है। स्तूप पर भगवान बुद्ध की मूर्ति है। यहाँ दोनों ओर की दीवारों पर अनेक बुद्ध मूर्तियाँ हैं।

यह गुफा छोटी है, परन्तु बहुत सुन्दर है। छोटी होने के कारण इसकी कला और कारीगरी में कोई अन्तर नहीं आया। इसके अन्दर की कारीगरी बौद्धकालीन वास्तुकला का एक अनुपम उदाहरण है।

गुफा नं० २६

यह गुफा भी चैत्य है। और १९ वीं गुफा से बड़ी है। लेकिन सजावट और आकार वैसा ही है। इसके सामने खम्भों वाला एक बराँडा है। गुफा में प्रवेश करने के लिए तीन दरवाज़े हैं। खम्भों और गुफा की दीवारों पर मूर्तियाँ खुदी हुई हैं। यहाँ के स्तूप में सादगी नहीं है जो हीनयान मत वालों के स्तूप में रहती है। इसमें जो स्तूप का आधार है, वह बहुत बड़ा ऊँचा मंच है। उसके ऊपर स्तूप, और उसके ऊपर सन्दूकची। मंच के आगे एक छोटा-सा मंडप बनाकर उसमें बुद्ध भगवान की खूब बड़ी मूर्ति बना दी है। उनकी मुद्रा प्रलम्बपाद है अर्थात् उनके पैर दोनों नीचे लटके हुए और हाथ उपदेश मुद्रा में हैं। मंच के चारों ओर सजावट है। भगवान के मंडप के ऊपर स्तूप पर उड़ती हुई आकृतियाँ खुदी हुई हैं। खम्भों से लेकर छत के शुरू तक मूर्तियाँ और सजावट खुदी है। छत अर्ध-चन्द्राकार है। या घोड़े की नाल की शक्ल सी है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

इस चैत्य में आवाज़ गूँजती है।

बाईं ओर दीवार में बुद्ध के परिनिर्वाण का दृश्य खुदा हुआ है। भगवान दाईं करवट शैया पर लेटे हैं। यह मूर्ति बहुत लम्बी है। दोनों तरफ साल के वृक्ष हैं। उनके नीचे उनके शिष्यों, भिक्षुओं और भक्तों की मूर्तियाँ हैं जो शोक में विलाप कर रहे हैं। भक्तों की शोक की मुद्रा और उनका हाव-भाव इतना स्वाभाविक है कि सब कुछ जीता-जागता सा प्रतीत होता है।

इसी दीवार पर 'मार की पराजय' का दृश्य भी खुदा हुआ है। इसमें बीच में बुद्ध बोधिवृक्ष के तले भूमिस्पर्श मुद्रा में बैठे हैं। बाईं ओर मार अपने राक्षस साथियों को लिए हाथी पर सवार है। सामने मार की लड़कियाँ बुद्ध को अपनी तपस्या से गिराने और मोह में फँसाने के लिए नाच रही हैं। दाईं ओर नीचे कोने में मार निराश होकर खड़ा है।

Sri Pratap Singh
Library
Srinagar.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

उपसंहार

अजन्ता का वर्णन कर रही हूँ, इसी बहाने कितने ही काग़ज़ मैंने रंग डाले हैं। आपने भी उन्हें पढ़ा, अपना समय लगाया, शक्ति ख़र्च की, कुछ-कुछ धुँधली सी धारणा उन रहस्यमयी अलौकिक गुफाओं के बारे में बनी भी होगी, पर क्या उससे मुझे सन्तोष हो रहा है ? नहीं। अजन्ता की गुफाओं का सही-सही और ठीक-ठीक वर्णन नहीं हो सकता, वह शब्दों से परे की चीज़ है, चक्षु और मानस इन्द्रिय से स्वयं ही अनुभव करने की वस्तु है।

मैं कोई टुरिस्ट एजेन्ट नहीं, कोई गाइड भी नहीं कि आपके आने-जाने से मेरी आमदनी में वृद्धि हो, फिर भी हर अभिलाषा को पूर्ण करने वाले उस असीम कृपालु भगवान से प्रार्थना है कि इस पुस्तक के हर पाठक को अजन्ता जाने का अवसर प्रदान करे, और वहाँ के कण-कण में छिपी हुई कला को प्रत्यक्ष देखने का मौक़ा दे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE